thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 21 दिसम्बर 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 21 दिसम्बर 2014 से 27 दिसम्बर 2014

पौ.कृ. अमा. ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 136, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

एच.एम.वी जालन्धर में मनाया गया महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर में 'महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस' मनाया गया। भजन गायन, संभाषण, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं हवन यज्ञ द्वारा स्वामी जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि प्रदान की गई।

प्राचार्या डॉ. रेखा कालिया भारद्वाज ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी के जीवन एवं उनकी विचारधारा के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि स्वामी जी का स्त्री–उद्धार एवं स्त्री–शिक्षा में अमूल्य योगदान है। स्वामी दयानन्द जी के नाम से अभिभूत आज कई स्कूल एवं कालेज शिक्षा के प्रसार में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

विद्यार्थी परिषद् की अध्यक्ष डॉ. रमा चौधरी ने भी छात्राओं को स्वामी दयानन्द जी के जीवनवृत के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर छात्राओं की ज्ञानवृद्धि के लिए स्वामी दयानन्द जी से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी करवाई गई एवं विजेता को पुरस्कृत भी किया।

कालेज की हैडगर्ल कु. वनिता खोसला ने भी स्वामी दयानन्द जी के जीवन सम्बन्धी छात्राओं को अवगत करवाया तथा बताया कि स्वामी दयानन्द जी आर्य समाज के संस्थापक हैं। योगदान कु. दिक्षा ने भी स्वामी दयानन्द जी के जीवन के महत्वपूर्ण पहलूओं को उजागर किया एवं स्वामी जी सम्बन्धी विचारों को छात्राओं के साथ सांझा किया।

प्रार्थना सभा के उपरान्त स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने के लिए हवन यज्ञ का भी आयोजन किया गया। मन्त्रोच्चारण द्वारा स्वामी जी को श्रद्धांजलि दी गई एवं उपस्थित छात्राओं को स्वामी जी के संघर्षपूर्ण जीवन के बारे में जानकारी प्रदान की, जयघोष के नारों द्वारा वातावरण को जोशपूर्ण बनाया गया तथा आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी के प्रति अपनी पूर्ण श्रद्धा प्रकट की गई।

शान्ति पाठ के साथ हवन–यज्ञ का सम्पन्न हुआ, तत्पश्चात् सब को ऋषि–प्रसाद वितरित किया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

सरला चोपड़ा डी.ए.वी. का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी ने दिया सदा मुस्कुराते रहने, प्रभु पर विश्वास रखने और कर्मशील बनने का सन्देश

सरला चोपड़ा डी.ए.वी. विद्यालय के वार्षिक उत्सव समारोह में आर्य श्रेष्ठ श्री पूनम सूरी जी, प्रधान डी.ए.वी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, मुख्य अतिथि के रूप में अपनी सहधर्मिणी श्रीमती मणि सूरी के साथ उपरिथत हुए।

माननीय आर्यश्रेष्ठ श्री पूनम सूरी जी ने 'यज्ञशाला' में पूर्णाहुति में अपनी भागीदारी दी और फिर बास्केट–बॉल कोर्ट का उद्घाटन किया। शंखध्वनि के नाद से सारा पंडाल गूँज उठा, जब माननीय मुख्य अतिथि जी ने पंडाल में प्रवेश किया। दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही डी.ए.वी. गान से चारों दिशाएँ गूँज उठी।

विद्यालय की प्रधानाचार्या जी ने अपने स्वागत भाषण में माननीय अतिथि श्री पूनम सूरी जी को एक सच्चे व कर्मठ

आर्यसमाजी बताया और विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पेश की जिसमें विद्यालय में हुई गतिविधियों और छात्रों द्वारा शैक्षणिक, कला संगीत और खेलों में विभिन्न स्तरों पर, छात्रों द्वारा किए गए सर्वोत्तम प्रदर्शन का ब्योरा था।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में Hopa Doodle नृत्य, Gobal-o-Mania, 'अतुल्य–भारत' के माध्यम से छात्रों ने दर्शकों को मंत्र–मुग्ध कर दिया। A Journey through DAV के द्वारा छात्रों की मौज मस्ती व तनाव का ताना–बाना बुनकर दिखाया मंच पर। कार्यक्रम का अंतिम पड़ाव था–पंचतत्व प्रकृति के ये तत्व आज अपना संरक्षण चाहते है। उन्हीं की कहानी, उन्हीं की जुबानी मंचित की गई।

माननीय अतिथि श्री पूनम सूरी जी ने छात्रों को जीवन में तीन बातों पर अमल करने को कहा। उन्होंने कहा हर परिस्थिति में अधरों पर मुस्कान रखें, परमात्मा पर अटल विश्वास रखे व कर्मठ बनकर हर कार्य को 'यज्ञ' समान समझे। हर छात्र प्रतिभावान है। उसे शिकार खाना नहीं, करना सिखाएँ। तन–मन से मजबूत बनें तभी विषम परिस्थितियों में डटे रह सकते हैं। तीन हज़ार से अधिक दर्शकों ने ज़ोरदार तालियों से उनके सम्बोधन भाषण को सराहा। इस अवसर पर सर्वश्रेष्ठ छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम का समापन विद्यालय के मैनेजर श्री सेठी जी ने 'धन्यवाद ज्ञापन' में आर्य श्रेष्ठ माननीय श्री पूनम सूरी जी द्वारा सुझाए गए रास्तों पर चलने का आश्वासन दिलाया।

कार्यक्रम में डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के पदाधिकारियों तथा निदेशकों सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 21 दिसम्बर, 2014 से 27 दिसम्बर, 2014

जो अन्धे-लंगड़े को तारता है

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

अयं विप्राय दाशुषे, वाजाँ इयर्ति गोमतः।
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे,
प्रान्धं श्रोणं च तारिषद् विवक्षसे।।

ऋग् १०.२५.११

ऋषिः ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद् वा। देवता **सोमः।** छन्दः **आस्तारपंक्तिः।**

● **(अयं)** यह [सोम प्रभु], **(दाशुषे)** विद्यादान करनेवाले, **(विप्राय)** ज्ञानी ब्राह्मण के लिए, **(गोमतः)** गौओं से युक्त, **(वाजान्)** अन्न, धन, बल आदि, **(इयर्ति)** प्रेरित करता है, प्रदान करता है, **(अयं)** यह, **(सप्तभ्यः)** [पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन–बुद्धि इन] सात ऋषियों के लिए, **(वरं)** वर, **(आ[इयर्ति])** प्रदान करता है [और], **(वः)** अपने, **(वि मदे)** विशेष मद में [आकर] **(अन्धं)** अन्धे को, **(श्रोणं च)** और लंगड़े को, **(प्र तारिषत्)** प्रकृष्ट रूप से तार देता है। [हे सोम!] तू, **(विवक्षसे)** महान् है।

● आओ, मित्रो! 'सोम' प्रभु की महिमा सुनो। सोम प्रभु जिसपर प्रसन्न हो जाता है, उसका कल्याण कर देता है। प्रसन्न वह उन्हीं पर होता है जो वर्णाश्रम–मर्यादा के अनुसार अपने कर्तव्य–पालन में संलग्न रहते हैं। वह विद्यदान करनेवाले ज्ञानी ब्राह्मण को धेनु, अन्न, धन, बल आदि प्रदान करता है। देखो, इन तपःपूत ज्ञानी ब्राह्मणों के अन्दर दिव्य गौएँ, अन्तःप्रकाश की दिव्य किरणें स्फुरित हो रही हैं, उसके अन्दर अदम्य आत्म–बल हिलोरें ले रहा है, बिना मांगे ही इन्हें गो–दुग्ध, अन्न, धन आदि अभीष्ट पदार्थ प्राप्त हो रहे हैं। यह सब इन्हें इनके विद्यादान के प्रतिफल में सोम प्रभु ने दिया है। इसी प्रकार वह स्व–स्व–कर्तव्य–निरत क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को उन–उनके योग्य ऐश्वर्य से सम्मानित कर कृतार्थ करता है। इसके अतिरिक्त सप्त–ऋषियों को वह वर प्रदान करता है। शरीर के अन्दर जो पंच–ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि ये सात ज्ञान के साधन निहित हैं ये ही सप्त–ऋषि हैं, इन्हें वह अभीष्ट वर–प्रदान से निहाल कर देता है। नेत्रों को दिव्य दृष्टि–शक्ति, श्रोत्रों को दिव्य श्रवण–शक्ति, रसना को दिव्य स्वादन–शक्ति, नासिका को दिव्य घ्राण–शक्ति, त्वचा को दिव्य स्पर्श–शक्ति, मन को दिव्य संकल्प–शक्ति, बुद्धि को दिव्य अध्यवसाय–शक्ति देकर कृतकृत्य कर देता है।

और भी उस सोम–प्रभु की लीला देखो। वह अन्धे और लंगड़े को भी तार देता है। अन्धे को आँखें देनेवाला, नेत्रहीन की प्रज्ञा–चक्षु देनेवाला, अज्ञानियों को ज्ञान–चक्षु देने वाला, अविवेकियों को विवेक की आँख देनेवाला वही है। वही लंगड़े को पैर प्रदान करता है, साधनहीन के भी समीप लक्ष्य–सिद्धि के साधन जुटा देता है। उसकी कृपा होने पर अन्धा चक्षुष्मान् से अधिक और विकल चरणवाला अविकल चरणवाले से अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है – **जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधरे को सब कछु दरसाई।** हे सोम! तुम महान् हो, सचमुच महान् हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में बात हो रही थी कि मन नहीं लगता, उचटता है, भागता है, तो घबराओ नहीं। उफान उठेगा अवश्य। जब–जब उफान उठेगा, तब–तब ओ३म् के नाम का दूध डालते जाओ। मैल को काटते जाओ। धीरे–धीरे वह समय आएगा, जब यह मन शुद्ध और निर्मल हो जाएगा। मैल से घबराओ नहीं। जन्म–जन्म की मैल है यह। इसे बाहर निकालना है, एक दिन में यह निकलती नहीं, परंतु अंततः निकलती अवश्य है। और अंत में शुद्ध व पवित्र चाशनी तैयार हो जाती है। और जो लोग कहते हैं हमें ईश्वर पर विश्वास नहीं है, उन्हें कैसे समझाऊँ।

स्वामीजी ने कहा कि ईश्वर सब जगह है। इस संसार के कण–कण में रहता है, परंतु दर्शन तब होते हैं जब मन को ओ३म् के जाप का दही डालकर जमाया जाता है। फिर धारणा, ध्यान और समाधि की मथनी से बिलोया जाता है। तब भक्त अपने हृदय में भगवान को अपने समक्ष देखता है, तब भगवान के दर्शन होते हैं।

स्वामीजी ने आगे कहा, हे भगवान को मानने वालो उसके अतिरिक्त और कोई सहायता नहीं करता। वह प्रत्येक स्थान पर सहायता करता है। जब सब लोग छोड़ जाते हैं तब वही आकर सहायता करता है। जो उस पर विश्वास करता है, उसका बेड़ा पार अवश्य होता है।

अब आगे...

प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

ओ३म् की बात कह रहा था मैं आपसे। यह भी कह रहा था कि बुद्धि के ठीक होने से सब–कुछ ठीक हो जाता है। बुद्धि के बिगड़ने से सब–कुछ बिगड़ जाता है। तीन प्रकार की बुद्धि बताई थी मैंने–बुद्धि, सुबुद्धि और कुबुद्धि। फिर यह भी कहा कि बुद्धि के ऊपर मेधा है; ऐसी बुद्धि है जो धारण करती है, मर्यादा बतलाती है, मर्यादा में रखती है, पुकारकर कहती है–धन अवश्य कमाओ परन्तु इसपर साँप बनकर नहीं बैठ जाओ। स्वयं खर्च करो; उसे दूसरों को दान दो। देखो कि तुम्हारे निकट कोई भूखा तो नहीं मर रहा है। यदि ऐसी बात है तो तुम्हारा धन कमाना बेकार; अर्थहीन है। दान कर दो। उसे दे दो उनको, जो उसके बिना जीवन से हताश हुए जाते हैं। हाँ, दान दे दो परन्तुवह भी मर्यादा से। इस प्रकार नहीं कि तुम स्वयं भी भूखे मर जाओ। किसी भी ओर अति न करो।

अति का भला न बोलना,
अति की भली न चुप्प।
अति का भला न बरसना,
अति की भली न धुप्प।।

हर वस्तु मर्यादा में अच्छी लगती है। मर्यादा में रहे तो सुख देती है। मर्यादा को सिखानेवाली बुद्धि का नाम मेधा है। इसे पश्चात् एक और बुद्धि है जिसे प्रज्ञा कहते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान से ऊपर जाकर यह प्रज्ञा नाम की बुद्धि प्रकट होती है। इससे ऊपर है प्रतिभा, जिसके प्राप्त होते ही अन्तरात्मा में ज्योति जाग उठती है। आत्मा की आँख खुल जाती है। आत्मा की आवाज़ सुनाई देने लगती है। इससे भी ऊपर है वह बुद्धि जिसे ऋतम्भरा कहते हैं, जो केवल सत्य को देखती है; जो सदा रही है, सदा रहती है, सदा रहेगी। रजस् और तमस् दोनों गुण जब परे हट जाते हैं, केवल सत्त्व गुण शेष रह जाता है, तब यह ऋतम्भरा बुद्धि जाग उठती है।

और मेधा से ऋतम्भरा तक ले–जानेवाली शक्ति कहाँ से मिलती है, यह भी सुनिये! ध्रुव की कथा तो आप जानते हैं। छोटा–सा वह बालक एक आसन में बैठकर घोर तप कर रहा था। हर प्रकार के मोह को त्यागकर, भक्ति में मग्न होकर, दुनिया को भूलकर, भगवान् को याद कर रहा था। तभी भगवान् जागती ज्योति बनकर उसके सामने आ खड़े हुए; बोले–''अरे ओ नन्हें भक्त! बोल, क्या चाहता है तू? माँग, क्या माँगता है? मैं आ गया हूँ।''

ध्रुव ने कहा–''मैं व्यापारी नहीं, सब–कुछ देकर कुछ लेने को नहीं आया। मैं केवल भक्ति के लिए भक्ति करता हूँ। मैं तुमसे तुमको माँगता हूँ।''

यह है मेधा से ऋतम्भरा तक पहुँचने का ढंग। पूर्ण श्रद्धा, अटल विश्वास और सच्चे ज्ञान के साथ ईश्वर–भक्ति और

thearyasamaj.org

उस ईश्वर–भक्ति का सबसे सीधा, सबसे सरल और सबसे महान् मार्ग है ओ३म्।

इस मन्त्र को हमारे ऋषियों ने आर्य–जीवन में ओतप्रोत कर दिया है। बच्चे का जन्म हो तो आज्ञा है कि सोने की सलाई पर शहद लगाकर उसकी जिह्वा पर ओ३म् लिखो। उसके कान में ओ३म् कहो जिससे उसे ज्ञात हो कि वह ओ३म् ही उसका रक्षक है। उसपर उसे जीवन–भर विश्वास करना है। मृत्यु के समय के लिए उन्होंने कहा–''ओ३म् का उच्चारण करो। ओ३म् का उच्चारण करता हुआ जो व्यक्ति मरता है वह सीधा सूर्यलोक में जाता है; जो नहीं करता वह नीचे के लोकों की ओर गिरने लगता है।'' छान्दोग्य–उपनिषद् के पहले प्रपाठक में यह बात आती है और बात शत–प्रतिशत सत्य है। आत्मा का निवास सूक्ष्म शरीर में है, जो दोनों छातियों के बीच में हृदय के निकट रहता है। मनुष्य के अन्दर हृदय जैसे सारे जीवन का केन्द्र है, उसी प्रकार इस दुनिया में सूर्य है। सूर्य से नीली, पीली, हरी, लाल आदि रंगों की किरणें निकलकर इस संसार को जीवन देती हैं। मनुष्य के अन्दर हृदय समाप्त हो जाए या उसे हानि पहुँचे तो सारा शरीर समाप्त हो जाता है, मृत्यु आ जाती है; दुनिया में यदि सूर्य न रहे तो दुनिया मर जाती है। सूर्य और हृदय दोनों में गहरा सम्बन्ध है। अपने–अपने स्थान पर दोनों केन्द्र हैं; दोनो से किरणें निकलती हैं। इन किरणों के कारण दोनों के मध्य में एक सीधी पक्की सड़क बन गई है। जिन लोगों के हृदय की गति उस समय बन्द होती है, जब वे ओ३म् का जाप कर रहे हैं, उसका ध्यान कर रहे हैं और उसका उच्चारण कर रहे हैं, उनका सूक्ष्म शरीर बिना किसी कष्ट के उस साफ़, सीधी और पक्की सड़क पर आगे बढ़ता है। परन्तु अन्त समय में ओ३म् का जाप प्रत्येक व्यक्ति तो नहीं कर सकता। केवल वे लोग कर सकते हैं जिन्होंने जीवन–भर उसका जाप किया हो, जीवन–भर उसकी साधना की हो। ऐसे लोगों के लिए यह 'ग्राण्ड ट्रंक रोड' अन्त में अपने दरवाजे खोल देती है; भुजा पसारकर कहती है, ''आओ, मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँ जहाँ परम ज्योति है।''

छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने यह भी बतलाया कि ओ३म् की उपासना करने वाले मनुष्य की शक्ति किस प्रकार बढ़ती है, कहाँ तक बढ़ती है और किस प्रकार प्रभाव करती है। ऋषि ने कहा, ''जैसे कठोर पत्थर के साथ, लोहे–जैसी चट्टान के साथ टकराकर मिट्टी का ढेला चकनाचूर हो जाता है, वैसे ही वह आदमी नष्ट हो जाता है जो ओ३म् की उपासना करने वाले को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है।''

उपासना करने वाले के लिए कितनी बड़ी बात है यह! वह स्वयं किसी को हानि नहीं पहुँचाता, स्वयं किसी के लिए बुरा नहीं सोचता, परन्तु इस महामन्त्र की अनन्त शक्ति उस पापी को समाप्त करके रख देती है जो ओ३म् के भक्त को हानि पहुँचाना चाहता है। इससे पूर्व कि वह रक्षा करने–वाली परम शक्ति के प्रेम को हानि पहुँचा सके, यह महान् शक्ति उसको चकनाचूर करके रख देती है।

'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के उपासना काण्ड में महर्षि दयानन्द ने भी बताया कि ईश्वर की भक्ति, ईश्वर की उपासना कैसे करें। क्या किसी घने भयानक जंगल में चले जाएँ? घर–बार छोड़ दें? किसी वृक्ष–विशेष या नदी–विशेष की शरण लें? क्या ऐसा किये बिना भक्ति नहीं हो सकती? महर्षि कहते हैं, ''अरे भोले मनुष्य, हो सकती है।'' उनके शब्द हैं–

''जो ईश्वर का ओ३म् नाम है, वह पिता–पुत्र के सम्बन्ध की तरह है और यह नाम ईश्वर को छोड़कर और किसी अर्थ के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उन सब में से ओंकार सबसे उत्तम नाम है।''

कितनी महिमा है ओ३म् नाम की! जब ब्राह्मण ग्रन्थों को देखें, गोपथ ब्राह्मण को, शतपथ ब्राह्मण को और दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थों को, तो ज्ञात होता है कि ओ३म् का नाम ही आत्मा की सबसे बड़ी चिकित्सा है। रोगी है न आत्मा! जन्म–जन्म की मैल जम गई है इसके ऊपर, जन्म–जन्म के पाप–ताप और कष्ट देने वाले संस्कार जमा हो गये हैं इसके ऊपर। उस मैल को, उन बीमारियों को दूर करने का उपाय क्या है? शतपथ ब्राह्मण कहता है– ''आत्मा की चिकित्सा और आत्मा का मोक्ष भी ओ३म् ही है।'' यह अद्भुत–सी बात लगती है, परन्तु विचार से देखिये यह कितनी सत्य है। बन्धनों में फँस गया है आत्मा। इनसे छूटना चाहता है। यह कैसे छूटेगा? बड़ी–बड़ी दीवारें खड़ी हो गई हैं। इसके आसपास। उनके अन्दर इसका दम घुटा जाता है। बाहर आने की इच्छा है। वह बाहर कैसे आयेगा? पहले दीवार टूटनी चाहिए; बन्धनों का अन्त होना चाहिए। इसलिए ऋषि ने कहा–''ओ३म् ही आत्मा की चिकित्सा है।'' परन्तु बन्धन से मुक्ति पाकर होता क्या है? क्या नये बन्धनों की ओर बढ़ना चाहिए? क्या आत्मा को नई दीवारें खड़ी करनी चाहिएँ अपने चारों ओर? नहीं मेरी माँ। नहीं मेरी बच्ची! यह तो आत्मा का लक्ष्य नहीं। आत्मा का लक्ष्य है ओ३म्। इसीलिए ऋषि ने कहा,''आत्मा का मोक्ष भी ओ३म् है।'' ओ३म् रास्ता है, लक्ष्य भी है (इस ग्रन्थ में आगे चलकर यह भी कहा कि ओ३म् ही आत्मा है)।

और माण्डूक्य उपनिषद् सारे–का सारा ओ३म् की व्याख्या और महिमा से भरा है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं, ''ओ३म् के जाप से पाप नष्ट होते हैं, जल जाते हैं, भस्म हो जाते हैं। प्राणायाम के द्वारा प्राणों को वश में करके धारणा और ध्यान की अवस्था से ऊपर उठकर जब भक्त ओ३म् का अजपा जाप करता है और उस जाप में और सबको, अपने–आपको भी भूल जाता है तो इसके सभी पाप, सभी बुरे कर्म, इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे प्रचण्ड भास्कर के निकलने पर अन्धकार समाप्त हो जाते हैं। '' यह सब–कुछ ओ३म् के जाप से होता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं, ''ओ३म् के जाप से पाप नष्ट होते हैं, जल जाते हैं, भस्म हो जाते हैं। प्राणायाम के द्वारा प्राणों को वश में करके धारणा और ध्यान की अवस्था से ऊपर उठकर जब भक्त ओ३म् का अजपा जाप करता है और उस जाप में और सबको, अपने–आपको भी भूल जाता है तो इसके सभी पाप, सभी बुरे कर्म, इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे प्रचण्ड भास्कर के निकलने पर अन्धकार समाप्त हो जाते हैं। '' यह सब–कुछ ओ३म् के जाप से होता है।

पुराणों के अन्दर भी ओ३म् की महिमा बार–बार वर्णन की गई है। अग्निपुराण के 215वें अध्याय के ये शब्द सुनिये, ''जो ओंकार को जानता है वही योगी है, वही रुकावटों का नाश करने वाला है। सारे मन्त्रों का सार यह ओ३म् है। इसकी सहायता से पापी भी इस अथाह भव–सागर से पार उतर जाते हैं।'' कैसे उतर जाते हैं? क्यों उतर जाते हैं? इसका उत्तर प्रश्नोपनिषद् देता है। इस उपनिषद् का पाँचवाँ प्रश्न सब–का–सब ओ३म् के सम्बन्ध में है। सत्यकाम महर्षि पिप्पलाद से पूछता है,'गुरुदेव, सारी आयु ओ३म् के जाप करने का फल क्या है?'' पिप्पलाद कहते हैं, ''इस ओ३म् से आत्मा वहाँ पहुँचता है, जहाँ ऊपर ब्रह्म और परब्रह्म का साक्षात् हो जाता है।'' पर ब्रह्म भगवान् का विश्वभर में फैला हुआ विराट् रूप है। इसी को देखकर वेद ''नमः विश्वरूपाय'' कहता है। हम यहाँ बैठे हैं, इससे परे दीवारें हैं। दीवारों से परे मकान या सड़क, उनसे परे और मकान और सड़कें–सारा नगर। इस नगर से आगे कुछ खाली जगहें हैं, खेत हैं, जंगल हैं, उनसे परे और नगर हैं, और गाँव हैं। उनके परे फिर खाली ज़मीन, फिर नगर, फिर ज़मीन, फिर नगर, पहाड़, नदियाँ, नाले, झीलें, मरुस्थल, इन सबको हम एक देश कहते हैं। इस देश के तीन ओर एक सागर लहराता है। एक ओर हिमालय खड़ा है। इनसे परे और देश हैं, और सागर, और पहाड़, और मरुस्थल हैं। इस प्रकार यह पृथिवी है, सूर्य की रोशनी में चमकती हुई, उसकी रोशनी के बिना अँधेरी। पृथिवी और सूर्य के बीच में बुध और शुक्र हैं। पृथिवी से परे मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण और ब्रह्म नाम के तारे हैं। यह हमारा सौर–मण्डल हैं इस विश्व में खरबों मीलों में फैले हुए। रात के समय हम जो तारे देखते हैं, उनमें से प्रत्येक तारा एक सूर्य है, हर सूर्य के साथ कितने ही ग्रह हैं। मानवी विज्ञान, मानवी ज्ञान और मानवी कल्पना के अनुसार अनन्त विश्व हैं। इसका अन्त दिखाई नहीं देता, और इस विश्व के एक–एक कण में, सामने जलती हुई इस छोटी–सी बत्ती में, और लाखों मील ज्वालाएँ फेंकते हुए सूर्य में, इस पृथिवी पर, पृथिवी से परे सौर–मण्डल के दूसरे ग्रहों पर, उनसे परे दूसरे सौर–मण्डलों में, अरबों–खरबों सूर्यों में ईश्वर की शक्ति कार्य करती है। ईश्वर की ज्योति चमकती है। पृथिवी की नीची–से–नीची गहराई में, आकाश की ऊँची–से–ऊँची चोटियाँ पर, हर ओर, हर स्थान पर, हर समय वह ही वह है। यह उसका अपर ब्रह्म रूप है, जिसे ओ३म् का जाप करने–वाला हाथ पर रखे खिलौने की भाँति देखता है। परन्तु उससे ऊपर, उससे परे भी तो ब्रह्म है–विश्व से परे, प्रकृति से परे, परम कल्याण रूप, परम शान्त, परमानन्द, परमेश्वर, परब्रह्म।

ओ३म् का जाप करने वाला ईश्वर के दोनों रूप देखता है। अपर ब्रह्म का रूप इससे आकर कहता है–

रोशन हैं मेरे जलवे हर शै में हाय! लेकिन
है चश्म कोर तेरी, क्या है कुसूर मेरा?

और ओ३म् का जाप करते–करते जब भक्त अपन–आपको भूलकर, प्रकृति को भूलकर, अन्तर्धान होकर देखता है, जब बाहर के पट बन्द हो जाते हैं और अन्दर के पट खुल जाते हैं, तब उस परब्रह्म का दर्शन होता है। यह है ओ३म् के जाप की महिमा। परन्तु यह जाप होता है? वह भी सुनिये! ओ३म् का जाप तीन प्रकार से होता है–पहला जाप एक मात्रा का, दूसरा दो मात्रा का, तीसरा तीन मात्रा का। एक चार मात्रा का जाप भी होता है परन्तु इसका वर्णन नहीं करूँगा। आप नहीं समझ सकेंगे।

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

अमरहुतात्मा श्रद्धानन्द

● आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को आज कौन नहीं जानता? उनके कार्य और व्यक्तित्व से पूरा विश्व परिचित है। परमेश्वर का निभ्रान्त ज्ञान कराने वाले जगद्गुरु महर्षि दयानन्द की दिव्य आकृति से, उनकी वक्तृता से अपनी आत्मा को धोने, पखारने वालों, निष्कलङ्क बनाने वालों में श्री स्वामी श्रद्धानन्द महाराज का अपना एक स्थान है।

मूर्तिपूजा से अनास्था

स्वामी श्रद्धानन्द निर्भीकता और संघर्ष की प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन निर्भीकता की गाथाओं, संघर्ष की महिमाओं से भरा पड़ा है। स्वामी श्रद्धानन्द को ईश्वर भक्ति निर्भीकता और स्पष्टवादिता कुलपरम्परा से विरासत में प्राप्त थी। पूजा पाठ करना अपने माता पिता से हँसते खेलते सीख लिया। आस्तिकता इतनी बढ़ी कि प्रतिदिन भगवान् का दर्शन करना, मन्दिर जाना अनिवार्य कृत्य समझते थे, पर यह आस्तिकता अधिक न चली, आस्तिकता नास्तिकता में बदलने लगी, हुआ यह कि काशी में रहते हुये वे प्रतिदिन विश्वनाथ का दर्शन करने जाया करते थे। एक दिन कारणवश मन्दिर पहुँचने में कुछ विलम्ब हुआ, फिर भी मन्दिर जा पहुँचे, पर पहरेदारों ने उन्हें द्वार पर ही यह कहकर रोक दिया "अभी रीवाँ राज्य की महारानी भगवान् के दर्शन कर रहीं हैं, तुम अन्दर नहीं जा सकते।" मुंशीराम के मन में अन्तवेदना हुई कि जो सबका नाथ है, उसके दरबार में भी भेदभाव? बस उनके मन से मूर्तिपूजा के प्रति श्रद्धा उठ गई।

नास्तिकता की जड़ें

पुनः मुंशीराम के मन ने ईसाइयत की ओर बढ़ना चाहा, पर ईसाइयत का अनुराग भी पादरी और ननों के घृणित कृत्यों को देख रफु चक्कर हो गया। पण्डों द्वारा नारियों के शील हरण के वीभत्स दृश्यों ने भी उनके प्रति घृणा के बीज बो दिये। बस यही से मुंशीराम के मानसिक संघर्ष का प्रथम सूत्रपात हो गया किसी प्रकार के धर्म पर श्रद्धा न रही, नास्तिकता ने जड़ जमा ली। धर्म के ठेकेदारों की बिना सिर पैर की छूआ–छूत की दीवारों ने ईश्वरभक्त बनने वालों की मांसाहार की अलबेली मस्तियों ने उन्हें भीतर ही भीतर इतना बींध दिया कि सबके प्रति घृणा ने पैर पसार दिये।

उनके पिता कोतवाल थे। सब तरह को ऐशी आराम प्राप्त था, पैसा था, नौकर चाकर थे, भरा पूरा परिवार था, किसी चीज की कमी न थी। इस आराम तलबी के चलते मुंशीराम के जीवन को अनेक प्रकार की नैतिक बुराईयों ने घेरा। खाली मन शैतान का घर।

(महर्षि दयानन्द व्याख्यान व जीवन का नया मोड़)

14 श्रावण संवत् 1936 को नैष्ठिक ब्रह्मचारी वेदोद्धारक आर्य संस्कृति सभ्यता के उन्नायक, तलस्पर्शी, शास्त्र मर्मज्ञ, अप्रतिहत तर्क शक्ति सम्पन्न महर्षि दयानन्द का बरेली में आगमन हुआ। महर्षि के प्रवचन स्थल की शान्ति व्यवस्था में मुंशीराम के पिता लाला नानकचन्द जी कोतवाल को नियुक्त किया गया। उन्हें अपने पुत्र को आस्तिक बनाने का अच्छा अवसर मिला। यद्यपि मुंशीराम को धार्मिक स्थलों के अत्याचार, दुराचार, भेदभाव की भावनायों ने मर्माहत कर दिया था, पुनरपि पिता के बारम्बार आग्रह पर महर्षि दयानन्द के व्याख्यान सुनने वे पहुँचे। वहाँ महर्षि के 'ओ३म्' पर हुये व्याख्यान ने उनके हृदय में जो कुल परम्परा से प्राप्त धार्मिक मुहाना था, उस मुहाने को स्वच्छ, निर्मल कर वेदोक्त धार्मिक स्त्रोतरूप में बहा दिया। महर्षि के व्यक्तित्व ने ईश्वर तथा वेद का समझने के लिए उनके जीवन में नया मोड़ प्रदान कर दिया।

पिता पर भी रंग

मुंशीराम महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों से इतने दृढ़ हो गये कि अवैदिक सिद्धान्तों को किसी भी कीमत पर मानने को तैयार न हुये, चाहे वह पिता की ही बात क्यों न हो? पिता के बार–बार कहने पर भी ज्येष्ठ मास की निर्जला एकादशी के संकल्प को पढ़ने के लिये उद्यत नहीं हुये। बड़ी निर्भीकता के साथ बोले "पिताजी संकल्प आपका है, धन भी आपका है, आप चाहे जिसे यह दान दे दें, मैं क्या करूँगा।" यहाँ से प्रारम्भ हुई, मुंशीराम जी की निर्भीकता की प्रथम कहानी। मुंशीराम के इस निर्भीक कथन ने पिता को पीड़ित तो किया, पर उनकी इस निर्भीकता ने पिता को भी अपने रंग में रंग लिया और उन्होंने पञ्चमहायज्ञविधि, सत्यार्थप्रकाश पढ़े। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उस निराकार परमेश्वर की महर्षि द्वारा संगृहीत संध्या के मन्त्रों द्वारा उपासना करने में कृत संकल्प हो गये।

मुंशीराम के विचारों ने पलटा खाया, मांस, मदिरा, जुआ आदि छोड़ दिये। उनके इस जीवन के उत्थान में उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी ने भी पूर्ण सहयोग किया। अपने गहने तक उतार कर सौंप दिये। मुंशीराम भारतीय नारी जाति के इस धैर्य, औदार्य और महिमा के प्रति सर्वदा श्रद्धान्वित रहे।

(आर्ष पाठविधि के संस्थानों की स्थापना)

मुंशीराम पं. लेखराम एवं पं. गुरुदत्त के सहचर्य से पूर्ण आर्य बन गये। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर्दा प्रथा, बाल विवाह, शिक्षा पद्धति में ब्रह्मचर्य का अभाव, विकृत पूजापाठ, छूआ छूत, परतन्त्रता आदि हटाने के लिये घनघोर संघर्ष किये। 'सत्धर्मप्रचारक' तथा 'श्रद्धा' पत्रिका प्रकाशित कर अपने मन्तव्यों को जनता तक पहुँचाया एवं कांग्रेस के अधिवेशनों में सक्रिय भाग लेकर उनका मार्गदर्शन किया। मुंशीराम को इस सामाजिक संघ ने महात्मा मुंशीराम बना दिया। वे सामाजिक कार्यों के साथ–साथ वकालत आदि की परीक्षा भी देते रहे परन्तु उत्तीर्णता के लिये रिश्वत आदि से समझौता नहीं किया। अपनी बेटी वेदकुमारी के मुँह से–

एक बार ईसा ईसा बोल,
तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रमैया,
ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।।

इन शब्दों को सुनकर ईसाइयत की इस घुट्टी से देश को बचाने के लिये जालन्धर आर्य समाज के कर्मठ सेनानी लाला देवराज जी से मिलकर जालन्धर में एक कन्या पाठशाला स्थापित की। जब इस कन्या महाविद्यालय में वैदिक शिक्षा पद्धति न होकर अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का बोल बाला देखा, तो बाद में कन्या गुरुकुल देहरादून की स्थापना की।

इसी प्रकार डी.ए.वी. कालेज में आर्ष पाठविधि न होने से एवं संस्कृत की प्रधानता न होने से गुरुकुल कांगड़ी की हरिद्वार में स्थापना की। जिसके वे द्वितीय आचार्य भी बने। गुरुकुल की स्थापना में कालेज पार्टी, मांस पार्टी का जमकर विरोध होने पर भी अपने उद्देश्य से तनिक न डिगे। गुरुकुल में वेदादि शास्त्रों के साथ–साथ कृषि, भौतिकी, रसायन, इतिहास, विज्ञान आदि विषयों को समुचित स्थान दिया। स्वामी श्रद्धानन्द का शिक्षा विषयक यह संघर्ष विदेशी हकूमत के लिये एक चुनौती बना और उनके तन मन धन के सर्वस्व त्याग से सिञ्चित गुरुकुल देशवासियों के लिये सशक्त प्रहरी बना।

(रॉलेट एक्ट का बहिष्कार)

स्वामी जी शिक्षा के कार्यों के साथ–साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रियता से जुड़ेहुये थे। गुरुवर्य स्वामी दयानन्द ने जिस दलितोद्धार कार्य की प्रस्तावना की थी, श्रद्धानन्द ने उसे क्रियान्वित किया। हिन्दू मुसलमानों को अपनी अद्भुत विवेक क्षमता से संगठित किया तथा गोरी सेना को अपनी छाती खोलकर 'मारो मेरी छाती में गोली' ऐसा सिंहनाद करते हुए **'रॉलट् ऐक्ट'** को अस्वीकार कर अदम्य साहस कर कीर्तिमान स्थापित किया। जामा मस्जिद के मिम्बर से–

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीमहे।।
साम. 1170।।

इस मन्त्र के द्वारा अपना 'भाषण प्रारम्भ करने का प्रथम अवसर और "ओ३म् शान्तिः शान्ति शान्ति" के साथ समाप्त करने का अन्तिम अवसर भी स्वामी श्रद्धानन्द ने ही प्राप्त किया। उनका यह कार्य लोक संग्राह शक्ति, स्वदेश भक्ति, जन शक्ति को द्योतित करने वाला था।

स्वामी श्रद्धानन्द देश की स्वतन्त्रता के लिये भली भाँति समझते थे कि जब तक हिन्दू मुस्लिम एक नहीं होगें, जाति बंधन की जंजीरे नहीं टूटेंगी, शिक्षणालय अपने नहीं होगें, तब तक स्वतन्त्रता मिलनी कठिन है। इसके लिये उन्होंने युद्ध स्तर पर शुद्धि का अभियान चलाया, जाति बन्धन तोड़कर अपनी सन्तानों के विवाह किये, एवं गुरुकुलों ही स्थापना की।

स्वामी श्रद्धानन्द के साहस, निर्भीकता एवं संघर्ष की कहानी बड़ी लम्बी है, जिसे थोड़े से शब्दों में बाँन्धना बड़ा दुष्कर है। बचपन में कुण्डली के अनुसार माता पिता ने मुंशीराम का नाम **'बृहस्पति'** रखा था जो व्यवहार में प्रसिद्ध तो न हुआ, परन्तु उन्होंने अपने इस नाम की गुणवत्ता और सार्थकता को अपने जीवन का पर्यायवाची बना दिया। सचमुच उनका बहुआयामी कार्य **'बृहस्पति'** सदृश ही था।

सत्य व श्रद्धा की प्रतिष्ठा

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने जीवन को बदलकर महात्मा की उपाधि प्राप्त की, गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर आचार्य पद का गौरव प्राप्त किया, मानव मात्र को एकता के सूत्र में बाँधने का अद्वितीय कार्य, अंग्रेज् सरकार के पिट्ठू न होकर अपितु देश से उसे खदेड़कर ब्रह्मचर्य तेज का उदाहरण प्रस्तुत किया। अपने जीवन की ऊँची नीची, गिरी पड़ी बातों को **'कल्याण मार्ग का पथिक'** पुस्तक के माध्यम से लिखकर अपनी सत्यनिष्ठा, सत्यप्रियता सत्यमयता का उद्भुत परिचय दिया। समाज से अस्पृश्यता निवारण के सूत्रधार बने और **अन्त में समाज में ही समा गये।** उनका प्रत्येक कार्य परार्थ था। असामञ्जस्य की परिस्थिति आने पर **गुरुकुलैषणा का** परित्याग भी सहर्ष अङ्गीकार कर लिया। ऐसे व्यक्तित्व का जीवन दो वाक्यों में इस प्रकार कहा जाता है कि–

"स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के लिये जिये और समाज के लिये मरे।"

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।
यजु. १६/३०।।

इस मन्त्र की व्याख्या श्रद्धानन्द ने अपने जीवन द्वारा प्रस्तुत की। महर्षि दयानन्द ने **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** में इस मन्त्र का अर्थ करत हुये लिखा है– जो मनुष्य सत्यव्रत को आचरण में लाता है, वह दीक्षा अर्थात् उत्तम अधिकार को प्राप्त होता है। जब मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त होता है, तब वह सब ओर से सत्कृत होता है। **सा अस्य दक्षिणा भवति** = वह उसकी दक्षिणा होती है। उस दक्षिणा = सत्कार को मनुष्य शुभ गुणों से ही प्राप्त करता है = **शुभगुणाचरणेनैवाप्नाति।** वह दक्षिणा जब ब्रह्मचर्यादि सत्य व्रतों से भरपूर होती है उससे अपना तथा दूसरों का सत्कार होता है। उसके आचरण में श्रद्धा होती है अर्थात् दृढ़ विश्वास उत्पन्न होता है क्योंकि सत्याचरण ही सत्कार कराने वाला है। जैसे जैसे उत्तरोत्तर सत्य के आचरण में श्रद्धा बढ़ती जाती है, वैसे वैसे श्रद्धा के द्वारा मनुष्य परमेश्वर, मोक्ष,

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका–क्या जाति, आयु, भोग निश्चित हैं, या इन्हें घटाया–बढ़ाया जा सकाता है। इसकी सीमा क्या होगी?

समाधान– जाति तो निश्चित है, बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

जन्म के समय कुछ आयु और भोग ईश्वर ने हमको दिये। ये पिछले जन्मों के कर्मों के आधार पर दिए। वो भी सीमित (लिमिटेड) हैं।

एक बात और, इस जन्म के नए कर्मों से हम अपनी आयु को बढ़ा भी सकते हैं।

कल्पना कीजिए, परमात्मा ने हमारे शरीर में जन्म के समय इतनी शक्ति भर दी कि अगर सामान्य रूप से हम उसको, खर्च करते रहें, तो हम अस्सी साल तक जी सकते हैं। अस्सी साल कर जीवन हमारे पिछले कर्मों का फल, इतनी आयु है। अब हम इसको कैसे बढ़ाएंगे?

अखबार में विज्ञापन आते हैं। विज्ञापन के नीचे एक स्टार लगा के लिखा रहता है–'कंडीशन्स एप्लाइ' (शर्तें लागू)। भगवान भी हमारे कर्मानुसार हमको जाति, आयु भोग देता है। वह कहता है कि जाति तो पूरे जीवन भर नहीं बदलेगी। लेकिन भोग और आयु बदल सकते हैं। परन्तु ''कंडीशन्स एप्लाई।'' वो कंडीशन्स है– 'अगर आप भोग बढ़ाने वाले नए कर्म करोगे, तो भोग बढ़ जाएंगे।' अगर नहीं करोगे, तो भोग नहीं बढ़ेगा। आयु बढ़ाने वाले कर्म करोगे, तो आयु बढ़ेगी। और वैसे कर्म नहीं करोगे, तो आयु नहीं बढ़ेगी। वो कंडीशन्स पर डिपेन्ड करता है। भोग बढ़ भी सकते हैं, घट भी सकते हैं।

आयु कैसे घटती–बढ़ती है, जानिए। मान लो, मैंने पाँच सौ रुपए की घड़ी बाजार से खरीदी। कम्पनी वालों ने कहा कि –''भाई, इस घड़ी की तीन साल की गारंटी है। लेकिन यह गारंटी हम इस शर्त पर देते हैं कि आप इस घड़ी को ठीक तरह से इस्तेमाल करेंगे। इस संभालकर प्रयोग करेंगे।''

अब आप घड़ी रेल की पटरी पर रख देंगे या हथौड़ा लेकर उस पर ठोंक देंगे, तो गारंटी क्या होगी? फिर एक सेकेंड की भी गारंटी नहीं है। घड़ी को दुर्घटना से बचाओं, धूप में मत फेंको, पानी में मत फेंको, सड़क पर मत फेंको, संभाल कर प्रयोग करो, तो यह तीन साल तक चलेगी। लेकिन तीन साल पूरे होते ही इसमें विस्फोट होने वाला नहीं है। इसके टुकड़े–टुकड़े भी नहीं होंगे। अच्छे ढंग से चलाओं तो घड़ी चार साल भी चलेगी। और वेल मेन्टेन करो, तो पाँच साल भी चलेगी। शरीर भी इसी प्रकार का है, यह भी भगवान की दी हुई एक मशीन है।

भगवान कहता है कि–तुम्हारे शरीर में मैंने अस्सी साल तक जीने की शक्ति भी दी है। अस्सी साल की गारंटी है। परन्तु याद रखो– ''कंडीशन्स एप्लाई''। आप जहर पी लोगे, आप रेल या ट्रक के आगे खड़े हो जाओगे, नदी में गिर जाओगे, तो कोई गारंटी नहीं। संभल के चलेंगे, तो अस्सी साल जिएंगे। फिर इस जन्म के नये कर्म करो, जैसे–व्यायाम करो, खान–पान ठीक रखो, संयम से खाओ, सात्त्विक भोजन खाओ, समय पर खाओ, अपने शरीर की प्रकृति के अनुकूल खाओ, मात्रा से थोड़ा कम खाओ, अधिक मत खाओ, रात को जल्दी सोओ, सुबह जल्दी उठो, ब्रह्मचर्य का पालन करो, ईश्वर की उपासना करो, दिनचर्या का पालन करो, ऋतुचर्या का पालन करो। इससे आपकी आयु बीस साल बढ़ जाएगी, सौ साल जी लेंगे। ऐसे आयु बढ़ती है।

इस जन्म के नए कर्मों से हम अपनी आयु को घटा भी सकते हैं। अगर शराब पियो, माँस–अंडे खाओ, उल्टे–सीधे काम करो, बुरे विचार करो, देर तक जागते रहो, देर तक सोते रहो, भ्रष्ट आचरण करो, अच्छे काम मत करो और बुरे काम करो तो आपकी आयु घट जाएगी। बीस साल कम हो जाएगी, अस्सी साल वाले का बीस साल पहले ही शांति–पाठ हो जाएगा। साठ साल में उसका जीवन पूरा हो जाएगा। यदि सामने वाला गोली मारे या कहीं ट्रेन–एक्सीडेंट की लपेट में आ गए, तो आयु तुरंत घट जाएगी। इस तरह से हमारी आयु घटती है और बढ़ती है।

अब भोग की बात जानिए। जन्म से जिस माता–पिता के घर में जन्म मिला, उनके पास अच्छी सम्पत्ति थी। इसलिए हमको पूर्वजन्म के कर्मों से अच्छा भोग मिल गया। अच्छी सम्पत्ति मिल गई।

भोग घटते कैसे हैं? आगे इस जन्म के नए कर्म जैसे–हमने पढ़ाई नहीं की, अपनी बुद्धि नहीं बढ़ाई, विकास नहीं किया, धन–संपत्ति को नहीं सभाल सके, जुआ सट्टे में, शराब में, इधर–उधर दूसरे उल्टे–सीधे कामों में संपत्ति खो दी, कोई दूसरे लोग छीन–छान के ले गए, तो हमारे भोग घट गए।

भोग बढ़ते कैसे हैं? जिस परिवार में हमको जन्म मिला। जो जन्म से पैतृक संपत्ति मिली। उससे हमने पढ़ाई–लिखाई की, बुद्धि का विकास किया। खूब अच्छी तरह से मेहनत की और खूब धन कमा लिया। अच्छी–अच्छी सुविधाएं घर में इकट्ठी कर लीं। इस प्रकार से हमारे इस जन्म के नए कर्मों से हमारे भोग बढ़ गए।

शंका–मनुष्य की आयु निश्चित है या नहीं? है तो कितनी?

समाधान– भारत में करोड़ों लोग ऐसा मानते हैं, कि हर व्यक्ति की मृत्यु कब, कहाँ , कैसे होगी, वो परमात्मा ने निश्चित कर रखी है। हम उसको बिलकुल घटा–बढ़ा नहीं सकते। जिस दिन हमारी मौत जहाँ लिखी है, वहीं पर होगी और उसी तरीके से होगी, जैसी भगवान ने निश्चित कर रखी है। यह बात गलत है। कारण कि:

वेदों में लिखा है कि आयु घटती है और बढ़ती है। वेदों में लिखा है कि मनुष्य की आयु फ्लेक्सिबल है। कोई मरने का दिन, समय स्थान पहले से निर्धारित नहीं है।

संध्या का एक मंत्र आप रोज बोलते होंगे–''जीवेम् शरदः शतम्, भूयश्च शरदः शतात्।'' हे प्रभु! हम सौ वर्ष तक, और सौ वर्ष से अधिक भी जिएं।

अगर किसी मृत्यु भगवान ने तय कर दी कि यह पैंतीस वर्ष में मरेगा, अमुक हाईवे पर मरेगा, ट्रक के नीचे टकराकर मरेगा। वह आदमी यदि कहे कि–''हे भगवान! मैं सौ साल जियूँ।'' उसको यह सौ साल जीने की प्रार्थना भगवान ने सिखाई। इसका मतलब यह है कि भगवान हमसे झूठ बुलवाता है। एक ओर तो कहता है कि–''तुम्हें पैंतीस से आगे तो जाने ही नहीं दूँगा।'' दूसरी ओर कहता है– ''मुझसे बोलो कि 'मैं सौ साल जियूँ, सौ से ऊपर भी जियूँ।'' यह विरोधाभास है।

जब हम प्रार्थना करते हैं–'हे ईश्वर! हम सौ वर्ष जिएं, सौ से अधिक भी जिएं।' इसका मतलब यह है कि हमारी आयु निर्धारित नहीं है। हम कभी भी उसको घटा–बढ़ा सकते हैं।

मान लीजिए कि एक व्यक्ति नेशनल–हाईवे पर स्कूटर से जा रहा था और पीछे से उसको ट्रक वाले ने टक्कर मार दी। लोग कहते हैं– साहब देखो, इसकी मौत यहीं लिखी थी। थोड़ी देर के लिए मान लिया कि भगवान ने लिखा था इसको इस दिन, यहाँ पर मरना है और ट्रक ड्राइवर ने ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा है, तो उस पर मुकदमा करना चाहिए या उसको ईनाम देना चाहिए?

वेद में लिखा है कि ईश्वर के आदेश का पालन करना धर्म है। और धर्म का फल सुख है। उसको तो सुख देना चाहिए, उस पर मुकदमा क्यों करो? क्या आप इस बात को मानने के लिए तैयार हैं कि जो ट्रक वाला किसी को ठोकर मार दे, तो उस पर आप मुकदमा नहीं करेंगे, बल्कि ट्रक ड्राइवर को ईनाम देंगे? क्योंकि आप इस बात को मानते हैं कि इसकी मौत ईश्वर ने यहीं लिखी थी। आप कहते है कि ईनाम नहीं देंगे। इसका मतलब हुआ, वह अपराधी है, तभी तो उस पर मुकदमा करते है। इसलिए वह मृत्यु ईश्वर की लिखी हुई नहीं है। ट्रक वाले की लापरवाही से दुर्घटना के कारण हुई है।

एक उदाहरण सुनिए–एक आतंकवादी ने बीस लोगों को मार दिया। कालान्तर में वह पकड़ा गया, उस पर कोर्ट में मुकदमा चला और प्रमाणित हो गया इसने बीस लोगों को मारा है। न्यायाधीश महोदय ने कागज पर लिख दिया कि इसको इक्कीस दिसंबर को सुबह ग्यारह बजे फाँसी पर लटका दिया जाए। वह लिखित आदेश जल्लाद के पास आया। जल्लाद ने न्यायाधीश के आदेश का पालन किया और इक्कीस दिसंबर को सुबह ग्यारह बजे उस आतंकवादी को फाँसी पर लटका दिया। क्या जल्लाद अपराधी है या नहीं है? उस पर मुकदमा करेंगे कि नहीं करेंगे? नहीं करेंगे, बल्कि उसको वेतन देंगे।

जल्लाद न्यायाधीश के आदेश का पालन करता है, और वह अपराधी नहीं कहलाता तो इसी प्रकार जो ट्रक ड्राइवर है, वो भी ईश्वर के आदेश का पालन कर रहा है, वह अपराधी क्यों होगा? उसको भी वेतन दो, ईनाम दो, तब तो हम मानें, कि हाँ भगवान का दिया हुआ आदेश है। अगर आप, जो भी मनुष्यों को मारें, उनको ईनाम देना शुरु कर दें, तो मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ, कि हाँ वो भगवान ने लिखा है। तैयार हैं आप लोग? अगर नहीं, तो इसका मतलब, वह कथन झूठ है, ईश्वर का आदेश नहीं है। जैसे आतंकवादी ने कानून तोड़ा और निर्दोष लोगों को मारा, इसलिए वो अपराधी माना गया। ऐसे ही उस ट्रक ड्राइवर ने कानून को तोड़ा और निर्दोष व्यक्तियों को मारा, इसलिए वो अपराधी गिना गया। इसलिए उस पर मुकदमा हुआ। इससे सिद्ध हुआ कि, यह सब भगवान का लिखा हुआ नहीं है।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द और पौराणिक पं. कालू राम शास्त्री

● डॉ. महावीर मीमांसक

स्मरणीय ऐतिहासिक संघर्षमय विजय युग गुरु विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द ने दीक्षा लेने के बाद व्याख्यानों द्वारा वेदप्रचार करना प्रारंभ किया। स्वामी जी संस्कृत भाषा में ही वेद प्रचार करते थे, जिसमें मूर्ति पूजा आदि धार्मिक अन्धविश्वासों का खण्डन भी होता था। पौराणि पण्डितक स्वामी जी के व्याख्यानों का आशय हिन्दी में जनता को उलटा ही अपने मत के अनुकूल समझा देते थे इस से स्वामी जी के व्याख्यान प्रभावहीन हो जाते थे। इसलिए कलकत्ते के बाबू केशव चन्द्र सेन ने स्वामी जी से हिन्दी भाषा में अपने व्याख्यानों द्वारा प्रचार कार्य करने करा निवेदन किया जिसे स्वामी जी तुरन्त मान लिया।

सन्1874 के जुलाई मास की पहली तारीख को स्वामी जी प्रयाग पहुंचे और सितम्बर के अन्त तक वहीं रहे। वहां स्वामी जी के परमभक्त श्री राजा जयकृष्णदास जी ने उनसे निवेदन किया कि महाराज यदि आप अपने व्याख्यान (धर्मोपदेश) लिपिबद्ध करवा दें तो उनको छाप कर जनता को पढ़ने को मिलें तो उन का स्थायी प्रभाव पड़े और जनता में एक अनुकूल में वातावरण बने। स्वामी जी महाराज ने तुरन्त अपने व्याख्यान लिपिबद्ध करवाने प्रारम्भ कर दिये। श्री राजा जय कृष्णदास जी के व्यय से यह समूचा प्रबन्ध हुआ। स्वामी दयानन्द जी ने जो अपने व्याख्यान पडितों (पौराणिक ही लिखने वाले थे) से लिखवाए स्वयं नहीं लिखे, जिन्हें पढ़ या सुन कर उनको संशोधित भी नहीं कर पाये और छपते हुए प्रूफ भी स्वयं नहीं देख पाये, तथा जिसके लिखने, छपवाने और शोधने वाले वे पौराणिक पण्डित थे जो स्वामी जी के कट्टर विरोधी थे, क्योंकि स्वामी जी उनकी आजीविका पर ही कुठाराघात करते थे, वही आदिम सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) है जिसका प्रकाशन बाद सन् 1877 में काशी के स्टार प्रेस में हुआ। हिन्दी संस्कृत में लिखने आदि का काम करने वाला पौश्राणिक पण्डितों के अतिरिक्त और कोई मिलता ही नहीं था।

अब इस से यह स्पष्ट है कि आदिम सत्यार्थ प्रकाश के कितनी ही बातें स्वामी जी के मन्तण्यों के विरुद्ध लिख दी औश्र वे छप गई। उन में बातें विशेषतः उल्लेखनीय हैं एक तो मृतक श्राद्ध औश्र दूसरा यज्ञों में पशु हिंसा। इसके छपने के बाद भी स्वामी जी महाराज ने नहीं पढ़ा। दो वर्ष सन् 1874 में ऋषि दयानन्द एक स्थान पर व्याख्यान देते हुये मृतकों के श्राद का खण्डन कर रहे थे कि एक ब्राह्मण हाथ में यह आदिम सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) लेकर शोर मचाते हुये बोला ''यहां क्या कह रहा है और अपने इस ग्रन्थ में क्या लिखता है, यह अन्धेर है। तब ऋषि ने उसे अपने पास बुलाया और पुस्तक लेकर देखी तो ऋषि को पता चला कि पौराणिक लेखकों ने कितना घपला और अनर्थ कर रखा है। तब ऋषि ने सन् 1878 में यजुर्वेद के पहले अंक के भाष्य में इसके विरुद्ध विज्ञापन दिया। किन्तु यज्ञों में पशुहिंसा के विधान का लेख ऋषि के सामने उस समय आया जब वे सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण के लिये संशोधन करने लगे। इन दोनों बातों का विरोधी पौराणिक पण्डितों ने भरपूर दुरुपयोग किया। स्वामी जी पर आरोप लगाया कि स्वामी जी पहले मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशुहिंसा का विधान मानते थे, बाद में अपने मन्तव्य से बदल गये। आर्य समाज के विद्वान और नेताओं पर आरोप लगाया कि सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण स्वामी जी का संशोधित नहीं है, स्वामी जी का वास्तविक सत्यार्थ प्रकाश तो आदिम सत्यार्थ–प्रकाश ही है जिस में मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशु हिंसा का विधान माना है। सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण तो आर्यसमाजियों ने दयानन्द के निधन के पश्चात् निकाला है जिस में इन्होंने मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशु हिसा को निकाल दिया। पौराणिक पण्डितों में इस मुद्दे को उठाने वाले अग्रणी पं. कालू राम शास्त्री थे जिसनें अपनी मंशा पूरी करने के लिये स्वयं आदिम सत्यार्थ प्रकाश पुनः छपवाया। इस विषय पर आर्य विद्वान नेताओं और पौराणिक पंडण्डतों में घनघोर शास्त्रार्थ लिखित और मौखिक दोनों प्रकार से चलता रहा। यही प्रसिद्ध प्रसङ्ग है जब हमारे नायक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आर्य समाज के मन्च से प्रमुख रूप से आगे आये। यह समय सन्1917–18 का है।

पौराणिक पं. कालू राम जब ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को बदनाम करने की मंशा से आदिम सत्यार्थ प्रकाश के उन अंशों को ले कर जो पौराणिक लेखकों ने छल कपट करके लिखे थे और ऋषि दयानन्द को उनके इस चाल का पता लगने पर उन अंशों का विज्ञापन देकर खण्डन किया जाचुका था, छपवाना चाहता था तब यह मुद्दा स्वामी श्रद्धानन्द जी के समक्ष परोपकारिणी सभा के ऋषि–बोधोत्सव के अवसर पर आया। तब आर्य नेताओं के सामने यह मुद्दा था कि पं. कालूराम की इस बदनीयती से भरी काली करत को विफल करने के लिये इस ग्रन्थ (आदिम सत्यार्थ प्रकाश) को पुनः छापने से न्यायालय द्वारा रोका जाए। उस समय वहाँ उपस्थित नेताओं ने निर्णय लिया कि यह विषय आर्य प्रतिनिधि संयुक्त प्रान्त को सौंपा जाये, यद्यपि स्वामी श्रद्धानन्द जी इस निर्णय के विरूद्ध थे। पंडित कालू राम की पुस्तक छपी और आर्य जगत में जबरदस्त आंदोलन प्रारंभ होगया। इसके विरोध में आर्य विद्वानों द्वारा बड़े–बड़े लेख लिखें गए। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी तब भी अपने निर्णय पर अडिग रहे और कहा कि इसका निराकरण और निदान तो बड़ा सरल था और वह यह कि इन आक्षेपों का युक्ति युक्त उत्तर देकर विरोधियों का मुंह बन्द किया जा सकता था और जनसाधारण में भ्रान्ति फैलने से रोका जा सकता था। परिणामस्वरुप स्वामी श्रद्धानंद जी ने स्वयं पं. कालू राम के आक्षेपों का लिखित उत्तर दिया जो संक्षेप में निम्न हैं

क्योंकि प. कालू राम शास्त्री के आक्षेप मनगढ़न्त, कल्पित और जनसाधारण को धोखे और भ्रम में डालने के लिये ये अतः स्वामी जी ने इन आक्षेपों को कल्पना कह कर लिखा और इन कल्पित आक्षेपों में पहला आक्षेप था कि कालू राम शास्त्री का दावा था कि मैंने जो प्रथम सत्यार्थ प्रकाश छपवाया है वह ऋषि दयानन्द के प्रथम सत्यार्थ प्रकाश की हू बहू कापी है, कोई यह नहीं सिद्ध कर सकता कि मैंने इस में कुछ पनी ओर से मिलावट कर के छपवाया है। कालू राम शास्त्री का यह दावा तो ठीक था क्योंकि वह ज्यों की त्यों प्रथम सत्यार्थ प्रकाश की कापी थी। किन्तु अगली दलील पं. कालूराम की यह थी कि जब यह ज्योंकी त्यों प्रथम सत्यार्थ प्रकाश की कापी है तो कोई आर्य समाजी यह सिद्ध कर के दिखावें कि प्रथम सत्यार्थ प्रकाश की पांडुलिप लिखवाने वाले पौराणिक पण्डितों ने अपनी ओर से मिलावट करके कुछ लिख दिया। यहां स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्य समाज की ओर से आगे आये और आकर प्रमाण दिया कि जब ऋषि को यह पता चला कि इस प्रथम सत्यार्थ प्रकाश में मृतकों का श्राद्ध करना छपवाया है तब उन्होंने संवत् 1935 (सन1778) के प्रारम्भ में यजुर्वेद भाष्य प्रथम अंक में विज्ञापन छपवाया कि जो सत्यार्थ प्रकाश में मृत पित्रादि के श्राद्ध और तर्पण करने के विषय में छपा है सो लिखने और शोधने वालों की भूल से छपवाया गया है। यज्ञ में पशु हिंसा का पता ऋषि को बाद में चला जिसका निराकरण सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण में किया गया।

पं. कालू राम शास्त्री का दूसरा काल्पनिक आक्षेप था कि चाहे आज के आर्य समाजी प्रथम सत्यार्थ प्रकाश को मानें या न मानें, परन्तु स्वामी दयानन्द इसे मानते थे अतः इस में लिखी सबकी सब बातें स्वामी जी के मन्तव्य हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस का भी अकाट्य उत्तर दिया कि प्रथम सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी के मन्तव्यों के विरुद्ध छपवा दिया गया। इसीलिये तो स्वामी जी ने स्वयं उस में संशोधन करके द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश छपवाया और उसकी भूमिका में जो शब्द लिखे वे ध्यान दने योग्य है जो पने में कहीं भूल रही थी वह निकाल शोध कर ठीक–ठीक कर दी गई हैं।

पं कालू राम जी का अगला काल्पनिक आक्षेप था कि प्रथम सत्यार्थ प्रकाश के लिखवाने से लेकर छपवाने तक की व्यय आदि से प्रबन्ध और व्यवस्था करने वाले श्री राजा जय कृष्ण दास पौराणिक थे अतः उन्होंने स्वामी जी के पौराणिक मन्तव्यों को जनता के समक्ष लाने के लिये इसे छपवाया। तथा स्वामी दयानन्द प्रथम सत्यार्थ प्रकाश के छपने तक और कुछ वर्ष बाद तक भी पौराणिक मन्तव्यों मृतक पितृ श्राद्ध और यज्ञ में पशु हिंसा आदि के समर्थक रहे किन्तु बाद में बदल गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस का भी मुंहतोड़ उत्तर दिया और आन्तरिक तथा ब्राह्य प्रमाणों से सिद्ध किया कि श्री राजा जय कृष्ण दास ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त और पक्के आर्य समाजी थे। ऋषि दयानन्द के अनेक प्रवचनों और लेखों से, जो वे गुरु विरजानन्द जी से दीक्षा लेने के बाद निरन्तर देते रहे, लिखित प्रमाण दे कर सिद्ध किया कि स्वामी जी के मन्तव्य आदि से अन्त तक अपरिवर्तित रहे, कभी नहीं बदले।

पं. कालूराम का अन्तिम आक्षेप, जब वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के सभी तर्क और युक्तिपूर्ण प्रमाणों से निरुतर हो गये तो यह था कि आर्यसमाजियों ने स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद स्वामी दयानन्द के पौणिक मत को बदल कर द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश छपवाया जिसकी भूमिका स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद सं.1941 में लिखी गई।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कालू राम के इस काले झूठ की पोल खोल कर उसका मुंह काला कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सप्रमाण ब्योरा देकर सिद्ध किया, कि द्वितीय सत्यार्थप्रकाश के संशोधन का कार्य सन् 1938 (सन्

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

thearyasamaj.org

हिन्दू संगठन और स्वामी श्रद्धानन्द

• डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रमुख शिष्यों में स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम अन्यतम है। 1 पं. लेखराम आर्य पथिक 2. पं. गुरुदत्त विद्यार्थी 3. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती 4. महात्मा हंसराज 5. लाला लाजपत राय इन पाँचों आर्यमनीषियों में स्वामी श्रद्धानन्द जी का कार्य बहुआयामी है। उनका बाल्यकाल और शिक्षा प्राप्त करने का समय अन्य अनेक लोगों के समान ही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन 1879 ई. बरेली में स्वामी दयानन्द सरस्वती से मिलने के बाद प्रारम्भ होता है, यद्यपि स्वामीजी से बरेली–मिलन के बाद चार वर्ष के दीर्घ समय के पश्चात् ही मुंशीराम आर्य समाज का सभासद् बनने का निर्णय लेते हैं। इसका कारण विद्यार्थि जीवन में जिन बुराइयों से वे लिर्थी हो गये थे उनका पूरी तरह से छूटना इतना आसान नहीं था। ऋषि के दर्शन, उनसे हुए प्रश्नोत्तर, उनके प्रवचनों का श्रवण, सत्यार्थ–प्रकाश का अविरल स्वाध्याय और आर्य मनीषियों–उपदेशकों के व्याख्यान –श्रवण इन सबके सम्मिमलित भाव का परिणाम यह हुआ कि दृढ़ संकल्पशक्ति के धनी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन निर्मल स्वर्ण की भाँति भास्वर और शोभायमान हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के अनेक पहलू हैं। आर्य समाज का कार्य और नेतृत्व स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रियता, शुद्धि आन्दोलन, गुरुकुल–स्थापना, अछूतोंद्धार, पत्रकारिता, साहित्य लेखन, सत्याग्रह में भागीदारी, वकालत, प्रवचन, व्याख्यान, आदि। स्वामी जी के कार्यों में एक महत्वपूर्ण बिन्दु हिन्दू–संगठन पर उनकी चिन्ता, आयोजना और एक विशिष्ट प्रकार की कार्य पद्धति भी है। आज स्वामी जी का स्वर्गवास हुए 88 अठ्ठासी वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी हिन्दुओं का भविष्य स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा निर्दिष्ट और किये गये कार्य पद्धति का अनुसरण किये बिना उज्ज्वल नहीं हो सकता।

(शुद्धि और दलितोद्धार कार्यक्रम) स्वामी जी के जीवन का अन्तिम अध्याय शुद्धि, संगठन और अछूतोद्धार का अध्याय है। स्वामी जी शुद्धि के साथ–साथ हिन्दू–संगठन के महत्व को समझते थे। वस्तुतः शुद्धि की सफलता हिन्दुओं के संगठन के सुदृढ़ हुए बिना नहीं हो सकती। हिन्दुओं के संख्यागत ह्रास की ओर उनका ध्यान 1912 ई में कर्नल यू. मुखर्जी ने उस समय आकर्षित किया जब वे कलकत्ता गये थे। उन्होंने स्वामी जी को बताया कि यदि भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या इसी रफ्तार से कम होती गई तो आने वाले 420 वर्षों में इस धरती पर से हिन्दू 'जाति का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। स्वामी जी की दृष्टि इस ओर जीवन के सान्ध्य काल में इसलिए भी गई कि महात्मा गाँधी की मुस्लिम–तुष्टिकरण की नीतिक। काँग्रेस के पास कोई तार्किक जबाब नहीं था। स्वामी जी ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के गाँधी जी के आवाह्न को स्वीकार किया। किन्तु उन वस्त्रों की होली जलाने की अपेक्षा वे देश के दरिद्रनारायणों में उसे वितरित किये जाने के पक्षधर थे। स्वामी जी को घोर आश्चर्य और दुःख हुआ। जब उन्हें विदित हुआ कि कांग्रेस के मुसलमान नेताओं ने गांधी जी से इस बात की स्वीकृति ले ली कि विदेशी कपड़ों को तुर्की भेज दिया जाए, जहाँ रहने वाले मुस्लिमि भाई इन कपड़ों का प्रयोग कर सकें। तब स्वामी जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारत के मुस्लिम नेताओं को अपने ही देश के दरिद्र लोगों की अपेक्षा अपने सम्प्रदाय के तुर्की मुसलमानों से अधिक से अधिक लगाव है।

अछूतों की समस्या का समाधान करने में कांग्रेस ने जिस उपेक्षा तथा उदासीनता का परिचय दिया इससे भी स्वामी जी दुःखी थे। एक तरफ दलितों के प्रति सर्वण जातियों का सदियों से आ रहा भेदभावपूर्ण व्यवहार, दूसरे स्वतंत्रता की लड़ाई में कांग्रेस का दलितों के प्रति इस उपेक्ष ने स्वामी जी को उद्विग्न कर दिया। कांग्रेस को जब अस्पृश्यता की समस्या के प्रति स्वामी जी ने सावधान किया तो जून 1922 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को लखनऊ में सम्पन्न हुई बैठक में उसके लिए एक उप समिति बनाने का निश्चय हुआ और स्वामी जी की ही उसका संयोजक बनाया गया। इसके लिए कुछ धनराशि निश्चित की गई, किन्तु आगे चलकर उस अल्प सी धनराशि में भी कटौती कर दी गई। जब स्वामी जी ने अस्पृश्यता–निवारण के लिए कतिपय चुनौतियों को संजीदगी से लेकर समाधान का मार्ग सुझाते हुए एक योजना बनाकर उसे पूरा करना चाहा, तो कांग्रेस ने इस उपसमिति को दी जाने वाली सहायता राशि ही कम नहीं की अपितु संयोजक के पद पर स्वामी जी को हटाकर एक अन्य व्यक्ति को नियुक्त कर दिया। हिन्दू–समाज के सबसे दुर्बल वर्ग दलितों की समस्याओं से कांग्रेस का कन्नी काटना स्वामीजी के लिए असहय था फलतः स्वामी जी ने कांग्रेस से किनारा करने का कठोर निर्णय ले लिया। कालान्तर में जब डॉ. आम्बेडकर ने कांग्रेस के इस कदम की कठोर आलोचना की और इस के लिए गाँधी जी तक को कठघरे में खड़ा कर दिया, तब किसी के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। दलितों के नेता डॉ. आम्बेडकर ने दलितोत्थान के क्षेत्र में स्वामी जी के कार्यों और उनके इरादों के प्रति पूरी–पूरी सहमति व्यक्त की है।

मुस्लिम साम्प्रदायिकता– दूसरी तरफ खिलाफत के नेताओं का राष्ट्र–विरोधी चरित्र धीरे–धीरे सामने आने लगा। कमालपाशा के नेतृत्व में वैचारिक क्रान्ति जब तुर्की में हो गई तब वहाँ खिलाफत की पुनः स्थापना की कोई गुंजाइश ही नहीं रही। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के मुस्लिम नेताओं का धैर्य समाप् हो गया। वे ब्रिटिश सरकार का तो कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे अतः अपना सारा आक्रोश असंगठित हिन्दुओं पर उतारने लगे और जगह–जगह हिन्दु–मुस्लिम दंगे प्रारम्भ हो गये। शायद ही कोई दंगा हिन्दुओं ने शुरु किया हो, सभी जगह मुस्लिमों ने दंगे प्रारम्भ कर दिये। मुस्लिम दंगाई यहीं तक नहीं रुके उनके मौलानाओं ने नागपुर की खिलाफत कान्फ्रेंस में कुरान की वे आयतें पढ़ीं जिनमें काफिरों को मारने के लिए कहा गया है। गाँधी जी के नजदीकी अली भाइयों की साम्प्रदायिक नीति का भी पर्दाफाश हो गया। इन सबका दुःखद परिणाम यह हुआ कि मालाबार प्रान्त में मुसलमान मोपलाओं ने वहाँ की हिन्दू जनता पर कहर ढ़ा दिया। उन पर अमानुषिक अत्याचार किये गये। हजारों कत्ल हुए और बहन–बेटियों की इज्जत से भी खेला गया। कांग्रेस ने इसके प्रतिकार के लिए कुछ नहीं किया, सिवाय अहमदाबाद कांग्रेस में धीमे स्वर में निन्दा करने के।

इन सारी स्थितियों को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी इस परिणाम पर पहुँचे कि प्राचीन हिन्दू जाति का एक प्रबल संगठन हो जिसमें सबसे ज्यादा ध्यान उन दलित–भाइयों के प्रति दिया जाए, जिन्हें हजारों वर्षों से पद–दलित किया गया है। स्वामी जी ने इस अवसर पर एक 'प्रेस वक्तव्य' में स्पष्टता से कहा कि ''इसका एक कारण यह प्रती होता है कि एक ओर जहाँ मुसलमान और सिख जैसी जातियाँ सामाजिक तौर पर संगठित हैं वहाँ हिन्दू–समाज का ढाँचा जीर्ण–शीर्ण और चरमराया हुआ है।''

इसी कारण स्वामी जी ने अपने अन्तिम समय में हिन्दू संगठन और अछूतोद्धार पर अधिक बल दिया।

धर्मान्तरण की समस्या

स्वामी जी इस बात को नहीं मानते थे कि हिन्दुओं के संगठित होने से उनका मुसलमानों से टकराव होगा अथवा साम्प्रदायिक वैमनस्य को बढ़ावा मिलेगा। यदि मुस्लिम, ईसाई आदि ऐसा सोचते है तो यह उनकी असहिष्णुता है। जब विश्वस्तरीय मुस्लिम बिरादराना है और चर्च दुनियाभर के ईसाइयों की फिक्र करते हैं तो यह कहाँ का न्याय है कि प्राचीन हिन्दू जाति अपना अस्तित्व इस देश में बचाये रखने के लिए संगठनात्मक स्तर पर प्रयास भी न करे। सच्चाई यह है कि सशक्त हिन्दू–समाज ही समान धरातल पर साम्प्रदायिक राजनीति से निपटने में सक्षम हो सकता है और अन्यों की अराष्ट्रीय गतिविधियों पर अंकुश लगा सकता है। स्वामी जी के समक्ष हिन्दू–संगठन के दो पहलू थे–

(I) नौमुस्लिमों को पुनः हिन्दू समाज में शुद्ध कर प्रविष्ट कराना (II) दलित जातियों को सामाजिक स्तर पर ऊँचा उठाना, जिससे वे अपने (अन्य) सर्वण हिन्दू–भाइयों जैसा हो सकें। सामाजिक उच्चावचता के भान में ज्ञान–कर्म और चरित्र ही कारण बने या मानदण्ड।

हिन्दू–समाज की अछूत या दलित समस्या का स्वामी ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी विचार किया था और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि मुसलमानी शासनकाल में जिन लोगों ने अपने परम्परागत धर्म को छोड़कर इस्लाम को स्वीकार किया था, उनमें से अधिकांश वे ही थे जिनका जन्म हिन्दुओं की इन्हीं निम्नजातियों में हुआ था और वे हिन्दुओं के पुरोहितशाही से तंग आ चुके थे। गरीबी के साथ–साथ निरंकुश शासकों के अमानवीय अत्याचारों से भी पीड़ित थे। अपने आपको इस विषम परिस्थिति से उबारने का उन्हें धर्म परिवर्तन ही एक मात्र उपाय दिखाई पड़ा। धर्म परिवर्तन के बाद भी एक कँजड़ा या कसाई किसी सैयदी की बेटी से या कोई जुलाहा या घसियारा अपनी लड़की का निकाह किसी शेख के बेटे से करने की सोच भी नहीं सकता था। किन्तु उन्हें यह सुकून देता था कि बादशाह और गुलाम का मजहबी हक बराबर है, जिस फर्श पर खड़ा होकर सुलतान खुदा की इबादत कर सकता है, उसी जगह एक गुलाम को भी खड़ा होकर नमाज पढ़ने का हक इस्लाम ने दे रखा है। साथ ही सवर्ण हिन्दुओं की ओर से निरन्तर लांछना, तिरस्कार और अपमान से निजात मिल पाने की ख्वाहिश जरूर थी, जो उन्हें बहुत हद तक मिल सकी।

शिक्षा की समतामूलक व्यवस्था:– स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के तेजस्वी शिष्य थे। उन्होंने ऋषि की शिषाओं को आत्मसात् किया हुआ था, तभी प्राचीन आदर्शों वाली गुरुकुल पर पूरा का उन्होंने इस कलि–काल में सूत्रपात

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

विश्व संगठन के वैदिक आधार – मैत्री और समता

● प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त – **'योग्यतम की जीत'**। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वाभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है – **"अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।"**

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दृष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करुणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यों को पाया। वेद का मन्त्र यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करुणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार हैं।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त "योग्यतम की जीत" के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार **"उपनिवेशवाद"** को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त **"संयुक्त राष्ट्र संघ"** (यू० एन० ओ०) का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ–बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद्, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह भी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार – वीटों–संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रुपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार **"क्रय शक्ति की समानता"।** (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिये। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद् आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएँ हैं। ये निबर्लताएँ विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती हेंकै।

वैदिक आदर्शों के आधार पर समानता और सबका कल्याण काम्य है –

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखःभाग् भवेत्।।"

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं।

वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है –

"मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।"

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें। इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु–पक्षी संसार के सभी जीव–जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा :– वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है – **"ऋग्वेद का मण्डल–मणि–सूत्र।"** ऋग्वेद में दस मण्डल हैं। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की आवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है –

"ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः।
सामनेन वो हविषा जुहोमि।।"

मन्त्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो।

यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

सम्पर्क : ईशावास्यम्
पी–30, कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट
कोलकाता–700081
फोन – 033–25222636, 9432301602

☞ पृष्ठ 04 का शेष

अमरहुतात्मा श्रद्धानन्द...

धर्मादि कार्यों को प्राप्त कर लता है अतः सत्य की प्राप्ति के लिये सर्वदा श्रद्धा और उत्साह आदि को बढ़ाना चाहिये।

मन्त्र के आदेशानुसार श्रद्धानन्द ने अपने विकृत जीवन को तिलाञ्जलि देकर श्रद्धा, सत्यता स्वीकार कर **दीक्षा=प्रतिष्ठा** प्राप्त की। उस प्रतिष्ठा के द्वारा स्वयं सत्कृत हुये और समूचे राष्ट को सत्कार दिलाया। लोगों की श्रद्धा प्राप्त की, बदले में श्रद्धा दी और सत्य स्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर **श्रद्धानन्द नाम** से अपने को विभूषित किया।

१२ अप्रैल सन १६१७ में संन्यास ग्रहण के शुभावसर पर अपनी **श्रद्धा** तथा **श्रद्धानन्द** नाम रखने की चर्चा करते हुये उन्होंने कहा–

" जब से होश सँभाला है तब से मेरे जीवन की प्रत्येक क्रिया की सञ्चालिका श्रद्धा ही रही है। गुरु (महर्षि दयानन्द) महाराज ने श्रद्धा का ही मन्त्र दिया था, मेरे लिये वही तारण मन्त्र बन गया। मैं हूँ, मेरे साथ मेरी श्रद्धा है, फिर संसार की आलोचनाओं की मुझे चिन्ता नहीं है।

श्रद्धा से प्रेरित होकर ही आज तक के इस जीवन को मैंने पूरा किया है श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है। अब भी श्रद्धा से प्रेरित होकर ही मैं संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ, इसलिये इस यज्ञ कुण्ड की अग्नि को साक्षी कर मैं अपना नाम श्रद्धानन्द रखता हूँ जिससे अगला जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल हो सकूँ।

सचमुच स्वामी श्रद्धानन्द ने श्रद्धानन्द नाम को श्रद्धा द्वारा ही सफलीभूत किया। जैसे खान से निकला सुवर्ण मिट्टी से लिसा, पुता होता है पुनः निखर कर **हिरण्य** अर्थात **हृदय** रमणीय **(हृदयरमणं भवतीति वा, निरु. २/३/१०)** बन जाता है, वैसे ही श्रद्धानन्द भी निखरकर जनहृदय **जनहित** रमणीय बन गये।

ऐसे महापुरुष का बलिदान दिवस धर्म के ठेकेदारों को, राजनीति के पहरदारों को, हिन्दू संगठन के दावेदारों को, पतित जीवन वालों को, नारी जाति को, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं आचार्यों को प्रतिवर्ष चेतना, स्वाहुति, जागृति, क्रान्ति, आत्म निरीक्षण, कर्त्तव्य निष्ठा, देश भक्ति आदि के लिये प्रेरित करता है। सभी उस महापुरूष के निर्भीक मानवीय तेज को अपने में भरने का प्रयत्न करेंगे, तभी उन श्रद्धानन्द के प्रति हमारी श्रद्धा समझी जायेगी।

प्राचार्या– पाणिनि कन्या महाविद्यालय,
वाराणसी–१०
सम्पर्क– आर्य कन्या गुरुकुल शिवगञ्ज, जि. सिरोही– ३०७०२७ (राज.)

thearyasamaj.org

गृहस्थाश्रम का महत्व व विशेषताएं

● कृपाल सिंह वर्मा,

1. हमारे यहाँ चार आश्रम हैं। (1) ब्रह्मचर्य आश्रम (2) गृहस्थ आश्रम (3) वानप्रस्थ आश्रम (4) सन्यास आश्रम।
ब्रह्मचर्य आश्रम में 25 वर्ष तक गुरुकुल में वास कर विद्या प्राप्त करनी होती है। गृहस्थ आश्रम में 25 से 50 वर्ष की आयु तक परिवार का पालन पोषण करना होता है। वानप्रस्थ आश्रम में 50 से 75 वर्ष की आयु तक वन में रहकर विद्या प्राप्त करना प्रमुख है। तथा 75 वर्ष की आयु के बाद संन्यास आश्रम ग्रहण कर पूर्ण आयु तक समाज तथा देश का सुधार करना। वेद विद्या का प्रचार करना, संन्यासियों का प्रथम कर्तव्य है।

2. अब प्रश्न यह है कि ब्रह्मचर्य आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम तथा संन्यास आश्रम के खर्चों को कौन वहन करता है। गृहस्थाश्रम ही इनके खर्चों को वहन करता है। ये तीनों आश्रम गृहस्थाश्रम के ऊपर निर्भर करते हैं। इसलिए गृहस्थ आश्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. समर्थ व्यक्तियों का कार्य है–
गृहस्थाश्रम को चलाना एक तपस्या है। गृहस्थाश्रम कष्टसाध्य है। इसलिए कमजोर व्यक्तियों को गृहस्थाश्रम धारण नहीं करना चाहिए।

4. गृहस्थ आश्रमवासियों के कर्तव्य–
संस्कारों का महत्त्व–
अन्तिम समय में ज्ञान एवं कर्म के संस्कार ही हमारी रक्षा करते हैं। संस्कार क्या हैं। जैसे गति के संस्कार मृत्यु के पश्चात् आत्मा संस्कारों के वशीभूत हो जाती है। हमारे संस्कार ही हमें वहाँ ले जाते हैं, जहाँ हम जाना चाहते हैं।

पंच कोषों का विश्लेषण
हमारे शरीर में पाँच कोष हैं–अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनन्दमय कोष। ये पाँच कोष शरीर को किस प्रकार संचालित करते हैं। इसको जानना चाहिए।

हमारा आर्य साहित्य–
ऋषियों द्वारा रचित छः दर्शन, अष्टाध्यायी, विज्ञान की पुस्तकें अनुपम हैं। इनका स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। इति।।

253 शिवलोक कंकर खेड़ा, मेरठ

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

स्वामी श्रद्धानन्द और ...

1880) में ही ऋषि दयानन्द ने करना प्रारंभ कर दिया था। द्वितीय सतयार्थ प्रकाश का सारा संशोधन 1939 के भाद्र मास तक (ऋषि के निर्वाण से14 मास पूर्व तक) हो चुका था। उन ऋषि दयानन्द उदयपुर में थे। श्रावण कृष्ण 10 से लेकर फाल्गुन कृष्ण संवल 1939 तक दिनों ऋषि दयानन्द उदयपुर में रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने चारण नवल दास के द्वारा लिखित कथन के आधार पर प्रामाणिक रुप से सिद्ध किया कि ऋषि के जीवित रहते हुए ही द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश की न केवल भूमिका ही अपितु 314 पृष्ठ (ग्यारहवां समुल्लास) तक छप चुके थे। चारण नवलदास का वह लिखित कथन देकर हम लेख को बिराम देंगे।

''मैंने स्वामी जी से नया सत्यार्थ प्रकाश जो उस वक्त 344 सफे तक छप चुका था ठाकुर गिरधारी सिंह रईस के वास्ते खरीदा था।''

इस के बाद पौराणिक पं. कालू राम शास्त्री की बोलती बन्द हो गई। लगभग 100 वर्ष पहले का यह युग आर्य समाज के संघर्ष का समय था जिस में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ऋषि दयानन्द, वेद, आर्य समाज और आर्य समाजियों के लिये जी जान से संघर्ष किया। ऐसे विवेकशील समर्पित, सर्वस्वत्यागी, जुझारू और विद्वान उद्भट संन्यासी नेता की आज बड़ी आवश्यकता है ताकि आर्य समाज पुनः अपने उत्कर्ष पर पहुंचे।

वैदिक शोध सदन
I–3/11, पश्चिम विहार
दिल्ली–63

वैदिक प्रार्थना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्नआसुव। यजु. 30.3

O Lord,
Keep us away from all ills and vices,
And, may we be always
devoted to all that is good and virtuous.

जगत्–स्वामी, मेरे भगवन,
हर बुराई को, बुरे को
दूर कर दो;
और जो कल्याणकारी
है–हमें भरपूर भर दो।

आस्था पर्व

महात्मा हंस राज पर्व पर हृदय के उद्गार
हंसराज की पुण्य–स्मृति पर सभी हुए एकत्र।
लहर खुशियों की यहाँ है सर्वत्र।।
फैली है सर्वत्र, किया मिलकर यह यज्ञ।
ऋचा पाठ के साथ ही आशीष दें सर्वज्ञ।।
कटे 'धीर' शुभभाव से कुरीतियों में मत फंस।
डी.ए.वी. के कर्णधार बनो आप भी हंस।।
हंसराज के स्मरण को रचा है 'आस्था पर्व'
डी.ए.वी. के सभी घटक अनुभव करते गर्व।
अनुभव करते गर्व, स्मरण कर उनकी जीवन गाथा,
श्रद्धा से स्वयं ही झुक जाए है माथा।
कहे 'धीर' उस महामना की किते चुकाएँ कर्ज,
सेवा की प्रतिमूर्ति बन निभा गए सब फर्ज।।

डॉ. धर्मवीर सेठी
'वरेण्यम्' ए–1055,सुशान्त लोक–I गुड़गांव

दयानन्द मॉडल हाई स्कूल फिरोजपुर छावनी ने मनाया वार्षिक उत्सव

आर्य अनाथालय स्थित दयानन्द मॉडल हाई स्कूल फिरोजपुर छावनी में बड़े धूमधाम से 28 नवम्बर 2014 को वार्षिक उत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। अनाथालय नर्सरी से दसवीं तक के सभी बच्चे इसी स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। स्कूल के एल.एम.सी. के सभी सदस्यों ने पधार कर अपना आशिर्वाद प्रदान किया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। पं. सतीश शर्मा एडवोकेट (चेयरमैन) और डॉ. सतनाम कौर मैनेजर ने अपने भाषण में बतलाया की स्कूल संतोषजनक गति से आगे बढ़ रहा है, और स्कूल में सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं, डॉ. सतनाम कौर ने बताया कि गत वर्ष विद्यार्थियों ने दसवीं की परीक्षा में 83% अंक लेकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। बच्चों ने स्वागत गीत, भांगड़ा, गिद्धा, भाषण प्रतियोगिता आदि प्रस्तुत करके दर्शकों का मनोरंजन किया। फैन्सी ड्रेस के माध्यम मे बच्चों ने अनेकों प्रकार के संदेश दर्शकों तक पहुँचाए जिसमें पानी बचाओ और पेड़ लगाओ विशेष तौर पर सहरानीय रहे। मुख्य अतिथि ने विद्यालय को धनराशि प्रदान की, प्राचार्य श्रीमती राज गोयल ने समारोह के अंत में सभी मेहमानों का धन्यवाद किया और जल–पान के बाद कार्यक्रम समापन हुआ।

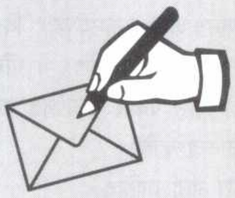

पत्र/कविता

मनुष्य मांसाहारी कैसे हो सकता है।

वर्तमान समय में मांस सेवन की अत्यंत बढ़ी हुई प्रवृत्ति को रोकने के लिए प्रचार की आवश्यकता है। जन साधारण को समझाने के लिए परमात्मा ने स्थूल रूप से भी समझाने का प्रयास किया है।

1. उत्पन्न होने के समय मांसाहारी प्राणियों की आखें बन्द होती हैं, परंतु शाकाहारी प्राणियों की आंखें खुली होती हैं
गौ, घोड़ा, हाथी, मनुष्य आदि आदि।

2. मांसाहारी प्राणियों को पसीना नहीं आता, इसके विपरीत शाकाहारी प्राणियों को पसीना आता है। मनुष्य को पसीना आता है।

3. मांसाहारी जीभ से चाटकर पानी पीते हैं। शाकाहारी मनुष्य एवं अन्य शाकाहारी प्राणी घूंट से पानी पीते हैं।

4. मांसाहारी प्राणियों के दांत नुकीले होते हैं, तथा चीरने फाड़ने के लिए पंजे भी होते हैं। शाकाहारियों के नहीं।

5. मांसाहारी प्राणियों की भोजन नलिका साढ़े तीन फुट लम्बी होती है, परंतु शाकाहारियों की 22 फुट लम्बी होती है।

6. मनुष्य की बनाबट बंदर से मिलती जुलती है। बंदर मांसाहारी प्राणी नहीं है, फिर मनुष्य मांसाहारी कैसे हो सकता है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी.ए.वी. इस प्रचार में प्रचुर योगदान देना चाहिए।

सत्यपाल सेठ
3404, गली न. 3,
आज़ाद नगर, पुतलीघर, अमृतसर

****

ताँबे के बर्तन मे पेय जल

आयुर्वेद की परम्परा के अनुसार यदि समान्य परिवार स्वस्थ रहना चाहता है तो प्रतिदिन ताँबे के गिलास में पीने का पानी ही प्रयोग करे। इस परम्प्रा को निभाने से शरीर के समस्त रोगों को लाीा मिल सकता है।

आयुर्वेद में लिखे सुझावों के अनुसार रात्री में ताँबे के गिलास, लोटे में सादा पानी भर कर रख दे तथा प्रातः प्रथम बेला में दैनिक क्रियान्वन के उपरान्त इस पानी का सेवन करे। इस पानी के सेवन से पेट के समस्त रोग, हृदय के रोग, गुर्दे के रोगों पर सामाचास्त्र पर नियन्त्रण किया जा सकता है। ताँबे के बर्तन में पानी को तमार जल भी कहते है। इस पानी को कम से कम आठ घंटे के उपरान्त सेवन करना चाहिए। ताबें के बर्तन में रखा पानी खराब नहीं होता? प्राया: अफ्रीका के देशों में ताँबे के पात्र में पेयजल की उपयोग की परम्परा काफी पुरानी है?

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कौर –अमरोह

****

राष्ट्र की बाह्यान्तर सुरक्षा

न यत्परो नान्तरऽआदधर्षदद् वृषण्वस्।
दु:शऽसो मर्त्यो रिपु:।। यजु.20–52।।

हे जन गण मन शासक वृषान।
हो सावधान! हो सावधान।।

सम्पूर्ण प्रजा आरक्ष आप।
पुरुषार्थ पोषणा दक्ष आप।।
बाहर भीतर के सकल शत्रु।
सुन शब्द आपके जायँ काँप।।

पा जायें नागरिक षवरित्राण।
हो सावधान! हो सावधान।।

तेरी सर्वोदय शिक्षा में।
सेनापति भी संरक्षा में।
सर्वत्र समुन्नति सम्मति हो,
सद्स्नेह और सद् इच्छा में।
रख स्नेह सन्तुलन स्वाभिमान।
हो सावधान! हो सावधान।।

जो दुराचार दुष्कर्मी हों।
द्रोही–लोभी भयचर्मी हों।
बाहर के अथवा भीतर के,
जो शत्रु सभी हठधर्मी हों।

दो उन पर अपना बाण–तान।
हो सावधान! हो सावधान।।

देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्', अवन्तिका प्रथम
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

तबके और अबके आर्यों के प्रति आर्यों के व्यवहार में बहुत अन्तर हो गया है

60–70 वर्ष पहले एक समय था, किसी नगरी में आर्यों का नाम सुनकर दूसरा उनसे मिलने के लिये पहुँच जाता था। एक समय था जिस समय कलकत्ता–83/1 विवेकानन्द रोड, के पं. प्रिय दर्शन सिद्धांत भूषण जी मुझ जैसे एक साधारण लेखक से मिलने के लिए– मो. मुरारई, जिला–वीरभूम (पं. बंगाल) पधारे थे और रात रहकर पुनः कलकत्ता चले गये। एक समय था जब मैंने सुना कि 19 विधान सारणी, कलकत्ता–6 मन्दिर में शास्त्रार्थ महारथी अमरसिंह आर्य पथिक जी आये हैं तो मैं भी उनके दर्शन के लिए वहाँ पहुँच गया था। करीब 2004 में रविवार को पं. उमाकान्त उपाध्याय जी से भेंट किया था। हवन सामग्री भी लिया था।

मैं कोई आर्य समाज का नेता नहीं हूँ। मैं तो एक साधारण लेखक हूँ। मुझे ऋषि दयानन्द की जीवनी सत्यार्थ प्रकाश और उनके 10 नियम, पतंजलि योगदर्शन आचार्य पं. वीरसेन वेदश्रमी जी से दीक्षा लेकर प्राप्त हुए तथा मैं योगाभ्यास करने लगा। तभी से आर्य सिद्धान्त के प्रति मेरी श्रद्धा–उत्पन्न हो गई और विशेषकर आध्यात्मिक लेख लिखने लगा।

आज लेखक के नाते जब भी किसी को फोन करते हैं तो वे फोन उठाते ही नहीं हैं। यदि उठाते ही हैं तो उत्तर में ''मैं गाड़ी में हूँ बाद में फोन कीजियेगा। सुनने को मिलता है कई लोग तो फोन ही काट देते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी आर्य सज्जन, कि यदि जरूरत पड़ जाये तो उसके पास कोई आने वाला नहीं है, सब अपने अपने कामों में व्यस्त हैं। प्रेम और सहानुभूति केवल अपनी कथनी मात्र रह गयी है।

श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'
मु. पो. मुरारई,
जिला–वीरभूम–(पं. बंगाल) 731219
मो. 8158078011

****

thearyasamaj.org

मेरे पिता जी (एक मार्मिक संस्मरण)

● इन्द्र विद्यावाचस्पति

पिताजी का मन कुछ ऐसे ढंग का बना था जिसे समझदार लोग, सांसारिक दूरदर्शिता या दुनियादारी के नाम से पुकारते हैं, वह कभी, भी उनके पास फटकती नहीं थी। जब कोई बड़ा कदम उठाते थे, तो अन्तरंग मित्रों से भी कहते थे–बस मैंने निश्चय कर लिया। कोई पूछता–कल शाम तक तो आप22ने कोई निश्चय नहीं किया था तो उत्तर देते वह मेरी निर्बलता थी। आज प्रातः काल ब्राह्ममुहूर्त में मेरी अन्तरात्मा ने निश्चय रूप से कह दिया, मुझे यह काम करना चाहिए। फिर प्रश्न उठता–यह होगा कैसे? उत्तर मिलता अब तक जिस प्रकार सब कार्य सहस्त्रबाहु के भरोसे हुए हैं, उसी प्रकार, फिर तीन चार घंटों में वह नया कदम बहुत दूर तक उठ चुका होता था। दृष्टान्त के लिए कांग्रेस की कार्यकारिणी या हिन्दू महासभा अथवा शुद्धि सभा से त्यागपत्र देने जैसे महान् प्रश्न्। प्रातः काल सूर्य निकलने से पहले लिखा हुआ विस्तृत त्यागपत्र, ऑफिस कॉपी,स्पष्टीकरण का तार सब कुछ मेज पर मिलता। सेवक द्वारा चिट्ठी डाक के डिब्बे में पहुंच जाती। तार–तारघर पहुंच जाता। उस सम्बन्ध में जितनी फाइलें होती, सभी अल्मारी में बन्द करने को, पंडित धर्मपाल विद्यालंकार के सुपुर्द हो जातीं।

इन मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के साथ भगवान् की दी हुई शारीरिक विशेषताएं भी थीं। हमारे दादाजी सिपाही थे। उनका पूरा ठाठ सिपाहीयाना था। वे पिताजी से दो अंगुल ऊंचे थे। फैलाव में विशालकाय थे, पिताजी ने शारीरिक सम्पत्ति विरासत में पाई थी। जब वे भीड़ में चलते तो सबसे ऊंचे दिखाई पड़ते। संकट काल में जनता एक दम मार्गदर्शन चाहती है, उसका खून इतना उबल चुका होता है कि न परामर्श की गुंजाइश होती है, न शाब्दिक आश्वासन की। उस समय पिताजी क्षणभर में इतिकर्त्तव्यता का निश्चय कर लेते थे।

एक मार्मिक प्रसंग का वर्णन यह है। जब हम दोनों भाई बंगले पर पहुंचे, तो पिताजी को बड़े कमरे में टहलते पाया, यह उनकी विचार की मुद्रा थी। गंभीर विचार के समय वे पीछे की ओर दोनों हाथ मिलाकर टहला करते थे। हमारे पहुंचने पर कुर्सी पर बैठ गए और अत्यन्त गम्भीरता से दराज में से फुलस्केप के आकार का लिखा हुआ कागज निकालकर, हमारे समाने रखते हुए कहा–इसे पढ़ लो, यदि तुम इससे सहमत हो तो इस पर हस्ताक्षर कर दो। उस कागज में लिखा था– मैंने अपनी शक्ति के अनुसार अपने जीवन मे वैदिकधर्म की सेवा की है। ऋषि दयानन्द की आज्ञा को शिरोधार्य कर वैदिकधर्म के पुनरुद्धार और आर्य जाति के उत्थान के लिए गुरुकुल का संचालन करता रहा हूं। मैंने गुरुकुल के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी है, परन्तु अब मुझे अनुभव हो रहा है कि जालन्धर में मेरा जो मकान है, वह पुश्तैनी नहीं हैं, मैंने अपनी कमाई से बनाया है, उसमें अभी तक मेरी ममता विद्यमान है। मैं उसे भी मिटा देना चाहता हूं। इस कारण मैं इस दान पत्र द्वारा वह मकान गुरुकुल कांगड़ी हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित करता हूं। जब वे दानपत्र पढ़ चुके तो बोले–"यदि तुमको इसमें कोई आपत्ति न हो, तो वैसा लिखकर दोनों भाई नीचे अपने हस्ताक्षर कर दो ताकि सभा वाले झगड़ा न मचावें। बीस हजार की कोठी थी, उसको बेचकर दस हजार से हरिश्चन्द्र का प्रेस चलाने का आदेश तथा मुझे विलायत जाकर, दस हजार से वैरिस्टरी पास करने का आदेश था। इस नए दान–पत्र से वह वसीयतनामा रद्द होता था। हमने चुपचाप उस अर्पणनामे पर स्वीकृत सूचक हस्ताक्षर कर दिए। उन दिनों गुरुकुल का उत्सव चल रहा था। आगरे के ठाकुर नत्थासिंह ने "मथुरा में एक बत्ती धीमी सी जल रही थी" भजन गया। तत्पश्चात् पिताजी ने खड़े होकर कहा–मैं गुरुकुल हेतु धन संग्रह करने दिल्ली गया। शहर के सबसे बड़े रईस के घर चन्दा मांगने पहुंचा। जब उसे मेरा पता चला, वह घर के अन्दर चला गया और कहा भेजा कि रायसाहब कहीं गए हैं। बहुत देर तक रायसाहब बाहर न आए मैं चला आया। अन्तरात्मा से पूछा– ऐसा क्यों हुआ? क्या कमी है–मुझमें। क्या मैंने अपने आपको सर्वतोभाव से धर्म अर्पण नहीं किया। फिर पिताजी ने अर्पणनामा पढ़कर सुनाया। सब समूह रो रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण जी रो रहे थे। महाशय कृष्ण रो रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द
से साभर

☞ पृष्ठ 07 का शेष

हिन्दू संगठन और ...

किया। ऊँच–नीच और धनी–गरीब की विषमता–मूलक जीवन पद्धति का समाधान उन्होंने शिक्षा में गुरुकुल आश्रम–प्रणाली में देखा। इस व्यवस्था में बाल्यावस्था से ही समान भोजन, समान रहन–सहन एवं समान वातावरण में निवास करने के कारण समता की भावना उत्पन्न हो जायेगी, जिसका सुपरिणाम यह होगा कि नागरिक जीवन में प्रविष्ट होने पर वे स्वयं सहृदय होकर समानता की भावना से प्रेरित रहेंगे। दलितोद्धार के लिए उनका सारा आग्रह व प्रयत्न इन्हीं आदर्शों से प्रेरित था। अपने शिष्य पं. धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड को पत्र द्वारा जो उन्होंने संदेश दिया था, जो उनके उपदेश या साहित्य हैं, सभी में समानता, बन्धुता और स्वतन्त्रता का सच्चा आदर्श देखने को मिलता है। विवाह के लिये प्रचलित जाति–प्रथा को तोड़ने का जिसे उनका संदेश उन्होंने अपने पुत्र–पुत्रियों पर भी लागू किया था, वही संदेश हिन्दू–समाज के संघटन को सुदृढ़ करने का आधार हो सकता है। कम से कम हमारी सरकार यह निर्णय लागू कर दे कि अमीर–गरीब के बच्चों को पठन–पाठन, भोजन–छादन की सारी सुविधाएँ एक समान होंगी। शिक्षण–व्यवस्था, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें और शैक्षणिक–संसाधन निशुल्क होंगे। अमीरी–गरीबी का भेद गृहस्थियों के लिए रहेगा, उनके बच्चों को शिक्षण–काल में गरीबी–अमीरी के प्रभाव से सर्वथा अछूता यदि रखा जा सके तो सही मायने में भेदभाव समाप्त होगा और आरक्षण की आवश्यकता भी नहीं रहेगी।

वर्तमान–कालिक चुनौतियाँ

नवजागरण के आन्दोलन तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहनराय, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, डॉ. लोहिया, डॉ. आम्बेडकर आदि मनीषियों तथा आर्यसमाज जैसी सुधारवादी सामाजिक संस्थाओं द्वारा पिछले सौ–सवासौ वर्षों से किये जा रहे आन्दोलनों और कार्यों का परिणाम अभी इतना ही हुआ है कि छूआछूत की भावना न के बराबर रह गई है। हरिजनों या दलितों का मन्दिर प्रवेश अब कोई बड़ी समस्या नहीं है, निर्धनता में भी कमी आई है। अन्तर जातीय–विवाहों का कुछ–कुछ प्रचलन होने लगा है। किसी ईसाई या मुसलमान का अपने घर–वापसी या शुद्धि का कट्टरपंथी हिन्दू सवर्णों या ब्राह्मणों द्वारा अब कोई विरोध नहीं होता। हिन्दू–संगठन की दृष्टि से कतिपय समस्यायें इस प्रकार हैं–

(I) हिन्दू समाज में बाबाओं, गुरुओं, भगवानों या धर्माचार्यों की बाढ़ आई हुई हैं। इन धर्माधिकारियों के पास अरबों–खरबों की सम्पति एत्रित हो गई है। इन्होंने हिन्दू–समाज के एक बड़े भाग को अपने पाखण्डों में फँसा कर उनका धार्मिक और आर्थिक शोषण करके उन्हें खण्ड–खण्ड कर विभाजित कर रखा है। एकता के मार्ग में ये गुरुडम के आढ़ती सबसे बड़े बाधक हैं। इनका ऐशो–आरामपूर्ण विलासिता का जीवन हिन्दू–समाज के लिए सबसे बड़ी समस्या है। ईसाई या मुसलमानों के किसी धर्मप्रचारक के पास न तो ऐसी जीवनशैली है और न उनकी सोच अपने अनुयायियों की जातीय चेतना के विरूद्ध है। आसाराम बापू, रामपालदास और साईं बाबा के ट्रस्ट इसके बानगी भर हैं। जब तक हिन्दू समाज के बड़े भाग पर इन बाबाओं, गुरुओं, ढोंगियों, पाखण्डी धर्माचार्यों का आंतक रहेगा तब तक हिन्दुओं का कोई संगठन कारगर न हो सकेगा। हिन्दू–धर्म के इन ठेकेदारों के विरुद्ध इस समय देश में आर्य समाज के अतिरिक्त कोई संस्था नहीं है जो इनका पर्दाफाश कर सके। आज हिन्दुओं के समक्ष यह सबसे बड़ी चुनौती है।

(II)हिन्दू–समाज में इस समय 3 तीन सबसे बड़े धड़े बन गये हैं, जिनका आधार हिन्दुओं की जाति–व्यवस्था है। ये तीन धड़े हैं– (क) सवर्ण हिन्दू (ख) पिछड़ी जातियाँ (ग) अनुसूचित जाति या दलित समाज/अनुसूचित जनजातियों या बनवासी–आदिवासियों को भी दलित वर्ग के अन्तर्गत समझना चाहिए। हिन्दुओं के इन तीन वर्गों का संघर्ष राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में गाँव से शहर तक दिखलाई पड़ता है। इसका एक बड़ा कारण **आरक्षण** भी है। **आरक्षण** का **समर्थन या विरोध दोनों ही स्थितियाँ समस्यामूलक है। स्वामी मूढ़ानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट शैक्षिक वातावरण और समान धरातल प्रदान करने के अतिरिक्त अन्य कोई समाधान मुझे नहीं सूझ रहा है।**

(III) हिन्दू–समाज में प्रचलित जाति–पाति के आधार पर वैवाहिक–व्यवस्था को समाप्त किये बिना हिन्दूओं का संगठन प्रभावी नहीं हो सकता। युवक–युवतियों के अभिभावकों द्वारा वैवाहिक–सम्बन्धों में कम से कम 50 पचास प्रतिशत अन्तरजातीय विवाह किये बिना हिन्दुओं की सामाजिक तथा जातीय चेतना जागृत नहीं हो सकेगी।

ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द का क्रान्तिकारी चिन्तन ही इन समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। हिन्दुओं में प्रचलित जाति–प्रथा के टूट जाने पर ही ईसाइयों और मुसलमानों की बड़ी संख्या में अपने पुराने घर में वापसी हो सकेगी। क्योंकि तब बेटियों का वैवाहिक–सम्बन्ध समस्या नहीं रह जायेगा। क्योंकि धर्मान्तरित मुस्लिम या ईसाई शुद्धि द्वारा जब अपने प्राचीन धर्म में परवर्तित होंगें तब जातीय पहचान देने और लेने की समस्या नहीं होगी। मोटे तौर पर कार्य या क्रम के आधार पर तब अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के अनुसार उनका वैवाहिक सम्बन्ध अपने समानधर्मा हिन्दुओं से हो सकेगा।

अध्यक्ष– संस्कृत विभाग
रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अमेठी (उ.प्र.) चलभाष–9415185521
मो.: 09960–23046

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 17-18/12/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. सुनारियाँ द्वारा चलाया गया स्वच्छता अभियान

डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सुनारियाँ की सभी अध्यापिकाओं, विद्यार्थिओं व सभी कर्मचारियों ने नगर स्वच्छता अभियान चलाया। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों की ओर से एक शोभा यात्रा निकाली गई। विद्यार्थियों द्वारा महर्षि दयानन्द, महात्मा हंसराज, महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, जवाहर लाल नेहरू व शहीद भगत सिंह जैसे अनेक देशभक्तों व आर्य समाज के प्रसिद्ध महानुभावों से

संबधित झाकियाँ निकाली गईं। यह शोभा–यात्रा गाँव भाली, आनन्दपुर से आरम्भ होकर गाँव पटवापुर व पटवापुर ढाणी तक गई। दूसरे दिन गाँव डीथल से आरम्भ होकर गाँव मायना होती हुई करौंथा में समाप्त हुई। आर्य समाज का प्रचार– प्रसार करते हुए अध्यापिकाओं तथा विद्यार्थियों द्वारा सुन्दर भजनों व जयघोष के माध्यम से सभी का मन मोह लिया गया और पूरे वातावरण को गुंजायमान किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्राचार्या महोदया श्रीमती अजीता कत्याल जी द्वारा की गई जिनके सुंदर भजनों ने पूरे ग्रामीणों को आन्नदित कर दिया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा यह शपथ ली गई कि हम सब एक जुट होकर इस भारत वर्ष को स्वच्छ व हरित भारत बनाएंगे व महर्षि दयानन्द जी व महात्मा गाँधी जी के सपनो को साकार करने का भरसक प्रयास करेगें।

आर्य समाज, खन्ना तथा डी.ए.वी. संस्थाओं द्वारा ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज, खन्ना तथा स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं द्वारा ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया गया। समारोह का शुभारम्भ हवन यज्ञ से किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण यह रहा कि मुख्यातिथि स. पुष्कर राज सिंह (प्रसिद्ध उद्योगपति) तथा विशेषातिथि कनाडा निवासी स. सुच्चा सिंह, श्रीमती अमरजीत कौर तथा स. सीतल सिंह जी ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक सस्वर मन्त्रोच्चारण कर यज्ञ में आहुतियां डालीं। प्रधाना श्रीमती सरोज कुन्दरा जी ने अतिथिगणों की सरलता, विनम्रता, सादगी, संस्कृति लगाव और

धर्म निरपेक्षता को बताते हुए कहा कि वे सही अर्थों में आर्य की श्रेणी में आते हैं। तत्पश्चात् मुख्यातिथि जी तथा विशेषातिथि जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

इस अवसर पर संस्था की भूतपूर्व वाईस प्रिंसीपल स्व. श्रीमती कमलेश सभ्रवाल भांबरी जी को समर्पित सामूहिक भजन–गायन प्रतियोगिता करवाई गई जिस में हिन्दी पुत्री पाठशाला सी.सै. डी.ए.वी. मॉडल सी. सै. स्कूल, डी.ए.वी. पब्लिक सी. सै. स्कूल तथा वेद मन्दिर मॉडल हाई स्कूल, खन्ना के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। संस्था के हितैषी श्री प्रितपाल गुजराल जी ने बच्चों को प्रोत्साहन के रूप पुरस्कार दिए।

'वैदिक संध्या यज्ञ पद्वति एवं सत्संग भजनावली' पुस्तक की 2000 प्रतियां नि:शुल्क बच्चों को वितरित करने का संकल्प किया।

प्रधाना श्रीमती सरोज कुन्दरा जी द्वारा स्वामी दयानन्द जी द्वारा समाज पर किए उपकारों का स्मरण दिलाया उन्होंने आर्य शब्द की परिभाषा देते हुए वेदों के वैज्ञानिक महत्व को बताया। प्रि. श्रीमती रजनी वर्मा ने आर्य समाज, यज्ञ महिमा को बताते हुए बच्चों को नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

एस.के.वी. डी.ए.वी. मलोट ने मनाई रजत जयन्ती

श्रीमति कर्मवाई डी.ए.वी. शताब्दी स्कूल की स्थापना की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में एक नये ब्लाक रजत जयन्ती भवन का उद्घाटन श्री हंस राज गंधार, सलाहकार डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् श्री मति सुदेश गन्धार के कर कमलों से एक गरिमामयी उपस्थिति में नवम्बर 22, 2014 को किया गया।

इस ब्लाक में आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित I.T. हब तथा एक Mini Theatre का निर्माण अपने आप में एक उदाहरण है। इस पूरे ब्लाक का क्षेत्रफल 20000 वर्ग फुट है, जिसका निर्माण–दो वर्षो में स्कूल के अपने यंयसधनों से किया गया है।

मुख्य अतिथि श्री गन्धार जी ने ध्येय निष्ठ होकर कार्य करने की सलाह देते हुए संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डी.ए.वी. खेड़ा खुर्द में हुआ महात्मा आनन्द स्वामी की कथाओं का वाचन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता और संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामीजी के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, खेड़ा खुर्द के प्राड्गण में महात्मा आनन्द स्वामी के जीवन से जुड़े संस्मरणों का वाचन करने के लिये प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें प्रथम से पांचवी कक्षा के छात्रों ने उत्साह से भाग लिया। नन्हें बच्चों के मुख से उनके संस्मर्णो को सुनकर सब प्रभावित हो गये। कथाओं, गायत्री मन्त्र की महत्ता और प्रतिदिन इसके जाप् की शक्ति के बारे में कई में बताया गया। कार्यक्रम के अन्त मे प्रधानाचार्या श्रीमती देविका दत्त जी ने अध्यापकों एवम् छात्रों की भूरि–भूरि प्रशन्सा की। विद्यार्थी भी प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर उत्साहित दिखाई दिये।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए एस.के शर्मा द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601 सम्पादक – श्री पूनम सूरी